ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय®

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 1 अंक : 6 अगस्त - सितम्बर 2011 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

जन्माष्टमी	डा. महेश पारासर	2
आपके प्रश्नों के समाधान	डा. महेश पारासर	3
आपकी वास्तु समस्या का समाधान	पं. अजय दत्ता	3
दशा ही निर्धारित करती है दिशा	डा. रचना भारद्वाज	4
दशा ही निर्धारित करती है दिशा	डा. श्रीमती शोनू मेहरोत्रा	5
पितृ दोष को वरदान बनाऐं श्राप नहीं	डा. कविता के अगरवाल	6
श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर करें पुत्र प्राप्ति के लिए उपाय	मोनिका गुप्ता	7
ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय	श्रीमती रेखा जैन	8
वास्तु एवं विज्ञान	पं. दयानन्द शास्त्री	9
कुण्डली में जाने कौन हैं आपके ईष्ट	पं. अजय दत्ता	10
शनि की धीमी चाल एवं तेल चढ़ाने का महत्व	पवन कुमार मेहरोत्रा	10
पिरामिड यंत्र का चमत्कारिक प्रभाव	श्रीमती रेनू कपूर	11
यज्ञों की लौकिक पारलौकिक उपादेयता	पं. देव स्वरुप शास्त्री	12
सूर्यनमस्कार ऊँ प्रणामासन	योगाचार्य प्रभुदयाल गुप्ता	12
ससुराल गेंदा फूल है– क्यों?	सुरेश अग्रवाल	13
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
इधर का न उधर का	विजय शर्मा	16
पूजा की सामिग्री		21

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा ए. डी. ऑफसैट, 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर 6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

जन्माष्टमी

जन्माष्टमी भारत का प्रमुख पर्व है। भारत के सभी प्रान्तों में जिस समारोह औश्र श्रद्धामिश्रित उत्साह से लोग भगवान् श्रीकृष्ण का जयन्ती उत्सव मनाते हैं वह सचमुच दर्शनीय है। मन्दिरों में दिव्य झांकियाँ, भगवत्प्रतिमाओं का मनोमोहक श्रंगार, भक्तिभाव–विभोर नर–नारियों द्वारा अखण्ड संकीर्तन भगवत्–कथा–प्रवचन, विशाल–शोभा–यात्रा (जलूस) तथा कृष्ण–जन्म सम्बन्धी विविध नाटकों का आयोजन–यह सब इस प्रकार के कार्य हैं जिन्होंने इस पर्व को धार्मिक–क्षेत्र से निकालकर जन–साधारण तक पहुँचा दिया है।

पुराणेतिहासानुसार आज के दिन अवतार धारण करके करुणा–वरुणालय भगवान् कृष्ण ने भारत भू को कृतार्थ किया था। असुरों के उत्पीडन से संत्रस्त प्रजा की रक्षा के लिये, दानवता के पंजे में फँसकर कराहती हुई मानवता के उद्धार के लिये वह जगन्नियन्ता आज के ही शुभ दिन वैकुण्ड़ का मोह छोड़ कर कंस के कारागार का बन्दी बन कर अवतीर्ण हुआ था।

भाद्र कृष्ण अष्टमी बुधवार का दिन, रोहिणी नक्षत्र, घोर अन्धकारमयी अर्धरात्रि, चारों ओर भयानक सन्नाटा! आकाश में घनघोर घटाओं का साम्राज्य! प्रकृति–मण्डल की इस दशा में उस काल के समाज का भी सच्चा चित्र देखा जा सकता है। कृष्ण–पक्ष के अन्धकार की भान्ति अत्याचारी कंस के कुशासन की कालिमा से उस समय की प्रजा सर्वात्मना लिप्त थी। जनता के हृदयों में निराश की घटाएँ चारों ओर घिरी हुई थीं। लोग सर्वथा प्रतिकार में अक्षम थे, अतः उनके जीवन में सन्नाटे के सिवाए कुछ था ही नहीं।

अष्टमी की ऐसी ही घोर निशा में, रात्रि के दुर्भेद्य अन्धकार को दूर कर, अपने दिव्य आलोक से काली घटाओं के वक्ष को भी चुराते हुए जनमन–आहलादकरू ब्रजचन्द्र आनन्दकन्द भगवान् कृष्णचन्द्र उदित हुए। उस चन्द्र के उदय के साथ ही समस्त भुवनों में आशा का प्रकाश भर गया, भक्तों के हृदयकुमुद खिल उठे, सन्त–महात्माओं के नयन–चकोरों को मानों प्राणपद सम्बल मिला। आज इन बातों को यद्यपि पाँच हजार से अधिक वर्ष हो गए है किन्तु काल का यह लम्बा विक्षेप, समय की यह विस्तृत परिधि जनता के हृदय में छाई हुई इन शुभ दिन के हर्ष उल्लास की स्मृति को फीका न बना सकी। आज भी हम उसी उत्साह से भगवान् के जन्मोत्सव को मनाते हैं जैसे कि सुदीर्घ काल पूर्व ब्रजमण्डल की जनता ने मनाया होगा।

जन्माष्टमी जयन्ती उत्सव है। इस प्रकार के जयन्ती उत्सवों का हिन्दू–संस्कृति की समृद्धि और संरक्षा में कितना प्रमुख भाग है–यह कहने की आवश्यकता नहीं है। ये जयन्तियां भगवान् की सत्ता के प्रति आशा और विश्वास को सिथर कर जनता में शक्ति, साहस और उत्साह को भर देती हैं। ये वे प्रकाश–स्तम्भ हैं जिनके अवलम्बन से तत्तत्कालीन समाज के कर्णधार अपने समाज की नाव को भीषण तूफानां और भयावह ज्वार–भाटों में से भी सर्वथा सुरक्षित रुप में अपने उद्देश्य तक खींच ले जाने में समर्थ हो सके हैं। अगर सच पूछा जाय तो आज हिन्दू जाति यदि जीव है– और शान के साथ जीवित है, तो महापुरुषों की इन्हीं जयन्तियों की बदौलत ही। इन्हीं से प्रेरणा प्राप्त करके, इन्हीं के जीवन से शिक्षा ग्रहण करके हम अपने एक निश्चित ध्येय की ओर बढ़ने में समर्थ हो सके हैं। अतः आज के दिन हमें विशेषतया भगवान् कृष्ण के चरित्र का पारायण कर उससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

शरीर और तदन्तरवर्ती आत्मा इन दोनों के अस्तित्व का दूसरा नाम ही जीवन है। इस जीवन को चरम विकास तक पहुँचा तथा पूर्ण समुन्नत करने के लिए भगवान् कृष्ण ने संसार को दो अमूल्य रत्न दिए हैं– (1) गो और (2) गीता। प्रथम को यदि शारीरिक–स्वास्थ्य और बुद्धि का मूल कहें तो दूसरी को आत्मिक–विकास के लिये संजीवनामृत कहना अनुपयुक्त न होगा। अतः सब कुछ छोड़कर भी यदि हिन्दू जाति इन्हीं दो (गो, गीता) वस्तुओं की आराधना करे तो संसार की कोई ऐसी शक्ति नहीं जो उसे अतिक्रमण कर सके। गीता के इस अमर सन्देश के कारण न केवल सम्पूर्ण भारत किन्तु असंख्य वैदेशिक जन भी इस दिन भगवान् कृष्ण के प्रति अपनी श्रद्धाजंलि अर्पण करते हैं। नास्तिकों के शब्दों में भी वे योगीराज, नीतिज्ञ–शिरोमणि तथा एक उच्च दार्शनिक महा पुरुष कहे जाते हैं। मुसलमानों में रसखान, मीर, पीरजादा, ताजबेगम आदि के ऊपर तो कृष्ण–भक्ति का वह रंग चढ़ा कि जीवन भर नहीं उतरा। ऐसे सर्वगुण–सम्पन्न लीला–पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण की जयन्ती को परम उत्साह से मनाना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है।

पाठकों के पत्र

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का पाठक हूँ। पत्रिका में प्रकाशित होने वाले लेखों का चुनाव आप बेहद सतर्कता से करते हैं यह पत्रिका को पढ़ने पर ज्ञात होता हैं पत्रिका में प्रकाशित राशिफल बहुत अच्छा होता है। सम्भव हो तो वास्तु समाधान का एक कॉलम भी आरम्भ करें।

सोमेश शर्मा – आगरा

पूज्य पारासर जी,

भविष्य निर्णय का जून - जुलाई का अंक प्राप्त किया। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों ने बहुत अधिक प्रभावित किया। श्रीमती रचना जी का लेख "स्वास्तिक रहस्य" बहुत ही अच्छा लगा। उम्मीद करता हूँ भविष्य में भी भविष्य दर्शन में ज्ञानवर्द्धक लेखों को ही स्थान मिलेगा।

मनोज गुप्ता– अलीगढ़

अमृत वचन

ज्ञानी का महत्व पारस से भी अधिक है।
पारस लोहे को सोना तो बना सकता है
किन्तु उसे पारस नहीं बना सकता
जबकि ज्ञानी अपने शिष्य को अपने
ही समान ज्ञानी बना सकता है।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– मेरी कुण्डली में कर्ज–मुक्ति तथा आर्थिक सम्पन्नता का योग है या नही। यदि हाँ तो कब तक?

उत्तर– वर्तमान में आपकी गुरु की महादशा चल रही है। समय गोचरानुसार भी अनुकूल नही है। गुरु की पूजा व दान करें। पक्षियों को दाना चुगाये ऋणमुक्ति यंत्र व मंत्र की उपासना लाभ देगी। **रमेश वर्मा – मेरठ**

प्रश्न– व्यापार में जितना धन डालता हूँ। उसकी बढोत्तरी नहीं होती है। कर्ज की स्थिति ही बनी रहती है।

उत्तर– आपकी समस्या के समाधन के लिए ये उपाय करें–

1. रोजाना सूर्य भगवान् को ताबें के बर्तन से अर्घ दें।
2. ऋणमुक्ति यंत्र अपने पास रखें एवं त्रिकोण मंगल यंत्र की रोजाना पूजा करें।
3. पन्ना रत्न कनिष्ठा उगली में बुधवार को धारण करें।

राजीव शुक्ला – बिजनौर

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या:- अपने मकान का नक्शा तथा अपने कमरे का नक्शा आपको प्रेषित कर रहा हूँ। आर्थिक व मानसिक रूप से बहुत परेशान हूँ। प्रत्येक कार्य में रूकावट का सामना करना पड़ता है। उचित उपाय बताये ? **विजय शर्मा–अलीगढ़**

समाधान– आपके मकान का नक्शा देखा। पूर्व-उत्तर के कोने पर बनी हुई आपकी रसोई आपको मानसिक चिन्तायें, आर्थिक समस्यायें ही प्रदान करेगी। रसोई शीघ्र अति शीघ्र दक्षिण-पूर्व की ओर स्थापित करें। आप कमरे में अपना बेड दक्षिण-पश्चिम की दिशा में लगायें तथा सोते समय सिर दक्षिण की ओर रखें। शीघ्र लाभ मिलेगा।

समस्या– मेरा किरायेदार मकान खाली नहीं कर रहा है, कारण व उपाय बतायें ? **शंकर सुमन - जम्मू**

समाधान– आपके किरायेदार के पास आपके मकान का दक्षिण-पश्चिम तथा दक्षिण-पूर्व हिस्सा है तथा आपके पास मकान का उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व हिस्सा है। ऐसे में मतभेद होना स्वाभाविक है। निसन्देह मकान खाली कराने में बहुत दिक्कत आयेगी। फिर भी आप स्वंय अनुकूल होने पर एक मूंगा रत्न धारण करें तथा त्रिकोण मंगल यंत्र की पूजा विधि विधान से प्रारम्भ करें तथा किरायेदार से सम्बन्ध मधुर बनाने के प्रयास करें, जल्द ही समस्या का कोई स्थायी समाधान होता दिखायी देगा।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

दशा ही निर्धारित करती है दिशा

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

ज्योतिषशास्त्र में मनुष्य के साथ होने वाली प्रत्येक शुभाशुभ घटाना का कारक नवग्रहों को माना गया है। ये नवग्रह ही हैं, जो पूर्वजन्म के कर्मो के शुभाशुभ फल को इस जन्म में कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित होकर दर्शाते हैं।

जातक के जीवन में होने वाली प्रत्येक शुभाशुभ घटना का संकेत जन्मुण्डली में स्थित ग्रहस्थितियों एवं योगों में निहित होता है। ज्योतिष के दिव्य ज्ञान की सहायता से इन योगों और ग्रहस्थितियों की सांकेतिक भाषा को पढ़कर आसानी से बताया जा सकता है कि जातक के समग्र जीवन में क्या–क्या घटनाक्रम घटित होगा, लेकिन इससे अधिक महत्त्वपूर्ण यह जानना है कि वह शुभाशुभ घटनाक्रम कब घटित होगा? इसका निर्धारण करने के लिए जिस पद्धति का वर्णन हमारे ज्योतिष ग्रन्थों में उपलब्ध होता है, उसे कहते हैं 'दशाफल पद्धति'। यूँ तो अनेक दशा पद्धतियों का वर्ण ज्योतिष शास्त्र में है, लेकिन इनमे से सबसे प्रमुख है 'विंशोतरी दशा पद्धति'। विंशोतरी दशा पद्धति में मनुष्य की पुर्णायु 120 वर्ष मानी गई है। इन 120 दशा वर्षो को नवग्रहों में बाँटा गया हैं। सूर्य के दशा वष 6, चन्द्र के दशा वर्ष 10, मंगल के दशा वर्ष 7, बुध के दशा वर्ष 17, गुरु के दशा वर्ष 16, शुक्र के दशा वष्र 20, शनि के दशा वर्ष 19, राहु के दशा वर्ष 18 एवं केतु के दशा वर्ष 7 है। ये दशाएँ जातक को सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु एवं शुक्र के क्रम से आती है। महर्षि पराशर रचित 'लघुपाराशरी ग्रन्थ8 में इस सम्बन्ध में कतिपय सूत्र दिए गए हैं, जिनका प्रयोग कर यह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि किस ग्रह की दिशा जातक को शुभ रहेगी अथवा अशुभः

1. यदि किसी ग्रह की महादशा में उसके मित्रग्रह की अर्न्तदशा जा जाए, तो शुभफलदायक होती है, यदि शत्रुग्रह की अन्तर्दशा हो, तो अशुभफलदायक होती हैं

2. यदि केन्द्रेश की दशा हो एवं त्रिकोणेश की अन्तर्दशा हो, तो जातक को शुभ फल प्राप्त होते है, इसके विपरीत यदि त्रिकोणेश की महादशा हो और केन्द्रेश की अन्तर्दशा हो, तो भी वह शुभफलदायक होती है।

3. किसी योगकारक ग्रह की महादशा में मारक ग्रह की अन्तर्दशा हो और राजयोग का आरम्भ हो, तो पूर्ण राजयोग की प्राप्ति नहीं होती है। प्रारम्भ में शुभ फलों का आभास होता है, लेकिन बाद में कार्य व्यवसाय में रुकावटें ही आती हैं।

4. जन्मपत्रिका में शनि–शुक्र की युति हो, तो शनि की अन्तर्दशा में शुक्र के फल प्राप्त होते है एवं शुक्र की अन्तर्दशा में शनि के फल प्राप्त होते हैं।

5. जन्मकुण्डली में शनि एवं शुक्र षड्बल में समान बलयुक्त हो, तो शनि में शुक्र की अन्तर्दशा एवं शुक्र में शनि की अन्तर्दशा शुभ नहीं होती है। इस अन्तर्दशा में राजा भी रंक बन सकता है।

❋ ❋ ❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

09717195756

❋ ❋ ❋

रिश्तों से बढ़ायें ग्रहों की शुभता

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445

रिश्तों का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व होता है। स्वस्थ रिश्ते होना मनुष्य की प्रगति का घोतक भी होते है। रिश्तों की मधुरता में प्रसन्नता तो उत्पन्न करती ही है एवं इसके साथ–साथ इनका ज्योतिषिय दृष्टि कोण से भी बहुत महत्व है।

प्रत्येक रिश्तों किसी न किसी ग्रह से जुडा होता है तो यदि हमें ग्रहों का शुभ फल प्राप्त करा है तो हमें निश्चित तौर पर अपने ग्रहों से संबंध रखेने वाले रिश्तों को सहेजकर रखा होगा। अन्यथा जाने–अनजाने हम ग्रहों का भोजन बन सकते है। अनेकों बार ज्योतिषिय उपायों के अन्तर्गत सिर्फ रिश्तों में सुधार करवाकर ही बड़े अप्रत्यशित शुभ फल प्राप्त हुऐ हैं। यदि आप की जन्म कुण्डली में ग्रह नीच के बैठे हो, अशुभ हो या दुष्टियाँ अशुभ हो तब ऐसी स्थिति में आप यदि उन ग्रहों से संबंधित रिश्तों को सुधार ले या उनकी गरिमा बनाऐ रखें तब हम इन ग्रहों के अशुभ फलों का काफी हद तक काबू में रख सकते हैं। ग्रहों एवं उनसे संबंधित रिश्तों का विस्तार पूर्वक विवेचन इस प्रकार है।

सूर्यः– सूर्य ग्रह की शुभता बढ़ाने हेतु अपने पिता का उचित सम्मा करे क्यों कि सूर्य ग्रह ज्योतिषशास्त्र में पिता का कारक होता है। प्रातः उठकर सर्वप्रथम पिता के चरण स्पर्श करें। पिता का कहना माने पिता की सेवा करें एवं उनके सम्मान की हर कीमत पर रक्षा करें। इससे समाज में स्वंय का भी सम्मान बढ़ता हैं।

चन्द्रमाः– चन्द्र ग्रह माता का कारक होता है। इसलिए इस ग्रह की शुभता बढ़ाने हेतु अपनी माँ का ध्यान रखें। माता के प्रति प्रातः काल चरण स्पर्श करें उनका कहा माने एवं माता की हर बड़ी बात का ध्यान रखें। इससे व्यर्थ की भाग दौड़ एवं मानसिक चिंताऐ भी दूर होगी। माता का जन्मदिन अवश्य मनायें। एवं समय समय पर माता को यथा शक्ति उपहार भेंट करें।

मंगलः– मंगल ग्रह छोटे भाई एवं चाचा की संतानों का कारक होता हैं। यदि आपके कोई छोटा भाई या चाचा के लड़के है तब आप उनके साथ संबंध मधुर बनाऐं एवं उन्हें भरपूर प्यार एवं सम्मान दें। तीज त्यौंहार पर उनसे अवश्य मिलें या फोन पर बात कर लें। इससे आपका मंगल यदि अशुभ स्थिति में है तो वह शुभ फल दे लगेगा और यदि वह शुभ है तो और अधिक बालवान होकर आपको फायदा पहुचाऐगा। पुलिस, सेना के लोग एवं सर्जन डाक्टर आदि इस ग्रह का विशेष ध्यान रखें।

बुधः– इस ग्रह को यदि प्रसन्न रखना चाहते हैं तो अपने माता (मान पक्ष) मित्रों एवं बहनों का विशेष खयाल रखें। बुध ग्रह बुद्धि का परिचायक होता है तो यदि आप जीवन में बुद्धि के बल पर कुछ प्राप्त करना चाहते हैं तो बुध ग्रह की शुभता आपके लिए अति आवश्यक हैं जिसके लिए आप इन रिश्तों में मधुरता एवं सौहाद्र लाने का प्रयास करें। आप निश्चित माने कि आपके निर्णय हमेशा सही होंगे एवं वह जीवन में आपको प्रगति के पथ पर ले जाऐगें। इससे ध्यान के केन्द्रित होता है।

गुरुः– गुरु ग्रह का कारक होता है बड़े भाई, गुरु एवं अध्यापक का। इसको खुश रखने का एक मात्र उपाय है गुरुओं का उचित सम्मान। गुरुओं एवं अध्यापकों के प्रति दिन चरण स्पर्श करें। उनकी हर आज्ञा का पालन करें। बड़े भाई का सम्मान करें। इस ग्रह की शुभता आपकी नेतृत्व क्षमता में वृद्धि करेगी एवं समाज में आपको सम्मान मिलेगा।

शुक्रः– भौतिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण ग्रह है। सारी सुख–सुविधाऐं यौन सुख शुक्र ग्रह की शुभता का परिणाम होते हैं। यह ग्रह परिवर्तन का कारक होता है। स्त्रियाँ शुक्र ग्रह की कारक मानी जाती है। वैवाहिक संबंधों की मधुरता इस ग्रह की शुभता बढ़ाती है। इस गह के प्रभाव से बचने के लिए हमें स्त्री जाति का विशेष सम्मान करना चाहिए। यदि शुक्र नीच का है तो उसे विशेषकर स्त्री जाति का सम्मान एवं आदर करना चाहिए।

शनिः– शनि का वास पैरों में माना जाता है एवं यह कर्मचारियों लेबर एवं नौकरों का प्रतिनिधि करता है। यदि आपको सचारु रुप से कारोबार चलाना है तो शनि का शुभ होना अत्यन्त आवश्यक है। शनि का उत्पादन से भी संबंध है। शनि ग्रह की शुभता के लिए नौकरों का शनि का शुभ होना अति आवश्यक है। समय पर नौकरों का प्रोत्साहन देना उनकी सुख–सुविधाओं का ध्यान रखना चाहिए। इससे लेबर की समस्या नही आयेगी। एवं शनि प्रसन्न रहेंगे। नौकरों का कभी भी तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

राहूः– राहू ग्रह दादा का कारक ग्रह है। राहू की शुभता के लिए दादा का सम्मान आवश्यक है। राहू तकनीकी शिक्षा का भी कारक है इसलिए तकनीकी धातु या तकनीकी से जुड़े हुए जातक दादा का उचित सम्मान करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

केतुः– केतु ग्रह नाना का कारक ग्रह हैं। नाना से रिश्तें मधुर करके हम केतू का आर्शीवाद प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार हम रिश्तों को मधुर बन कर काफी हद तक ग्रहों को खुश रख सकते हैं। ❋ ❋ ❋

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

पितृ दोष को वरदान बनाऐं
श्राप नहीं

डा. (श्रीमती) कविता के अगरवाल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ
मो.- 9897135686, 9219577131

पितृ का शाब्दिक अर्थ है पिता या पितर जो मनुष्य के पूर्वज है। हर घर में पितरों अर्थात पूर्वजो का देवताओं के समान ही पूजा जाता रहा है। पितृ बुजूर्गो के वह सूक्ष्म शरीर है, जो मृत्यु के उपरांत तथा पुर्नजन्म होने तक, विभिन्न लोको में वास करते है। मृत्यु को प्राप्त पूर्वज जो स्वयं पीड़ित हो या अन्य ताकतवर आत्मा के प्रभाव में हो, बंधन से मुक्ति चाहते हो, मोह–माया में फँसे हो, यही मृत पूर्वज जब परिवार पर नकारात्मक प्रभाव डालते है तो यही पितृ दोष कहलाता है क्योंकि पितृ स्वयं पीड़ित हो जाता है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार सूर्य इस सौर मंडल का राजा है। सूर्य से पिता की स्थिति व राहू को दादा का कारक माना जाता है सूर्य जब शनि व राहु के प्रभाव में होता है जातक पितृ दोष से पीड़ित होता है। सामान्यतः पितृ दोष के निम्न लक्षण देखे जाते है–

1. पूरी मेहनत के बाद भी कार्यो में अपेक्षित सफलता नहीं मिलती है या आवश्यक विलंब होता है।
2. पिता–पुत्र में वैचारिक मतभेद व तनाव रहता है
3. परिवार में बरकत नहीं होती है।
4. परिवार में मागंलिक कार्य विवाह में अनावश्यक विलंब होता है।
5. परिवार में बने–बनाये काम अंतिम समय पर बिगड़ जाते है।
6. शरीर में बिना बजह दर्द और भारीपन रहता है।
7. स्वपन में सर्प के दर्शन होते है।
8. यदि पितृ बंधन में हो तो जातक के सिर में साइनस और माइग्रेन की तरह दर्द होता है।
9. यह आवश्यक नहीं है कि परिवार के पुरुष ही पितृ बने स्त्रियां व बच्चे भी पितृ योनि में हो सकते है।
10. अपने पिता, पितामह या पिता तुल्य ताऊ–चाचा के साथ अन्याय व अत्याचार पितृ दोष का कारण बनता है।

पितृ दोष निवारण हेतु उपाय–

1. पिता को पूर्ण सम्मान दे और उन्हें सुखी रखें।
2. पितरों के निमित्त घर में दीपक, अगरबत्ती नित्य प्रति जलाएं।
3. अमावस्या के दिन अपने पितरों के लिये श्राद्ध और पिंड दान करना चाहिये।
4. आश्विन कृष्णपक्ष (पितृपक्ष) में जो मनुष्य मृत्यु तिथि पर अपने पितरों का श्राद्ध करता है, उस श्राद्ध से पितृ एक वर्ष तक तृप्त रहते है।
5. रोज प्रातः पूजा के समय 'ऊँ पितरा नमः' का कम से कम 21 बार जाप करें।
6. माघ, वैशाख, ज्येष्ठ और भाद्रपद माह की अमावस्या को पितरों के निमित्त यथायोग्य दान करें।
7. हर अमावस्या को 5 फल गाय को खिलाएं।
8. पितरों के निमित्त गोदान करने से वे बड़े प्रसन्न होते है।
9. किसी जलीय या उचित स्थान पर पीपल गूलर का वृक्ष लगाकर वहाँ चबूतरा आदि बनवाने से पितरों का आर्शीवाद प्राप्त होता है।
10. गीता का पाठ, नियमानुसार करा कर, यज्ञ, श्रीमदभागवत तथा कभी–कभी घर में बाह्मण भोजन कराते रहना चाहियें।
11. अस्पताल, मंदिर, विद्यालय, धर्मशाला, गरीबों और ब्राह्मणों के बच्चों की शिक्षा प्राप्ति के लिये पितरों के नाम से निर्माण करने तथा सहयोगस्वरुप दान करने से पितृ प्रसन्न होकर आर्शीवाद प्रदान करते है।

प्रत्येक व्यक्ति को, अपने धर्मानुसार समय–समय पर पितृ शांति के उपाय करते रहने से घर में सुख–शांति रहती है। पितृ दोष को उपायों से अपने अनुकूल बना लिया जाय तो यह रक्षा कवच का कार्य करता है तथा अन्य नकारात्मक प्रभावों से रक्षा करता है। अगर इसको अनुकूल नहीं बनाया जाय तो यह एक बड़ी बाधा साबित होता है।

पितृदोष के कथित श्राप को, उपायों और श्रद्धा से, वरदान में बदले तथा अपने वर्तमान जन्म को सुधारे है। ❋❋❋

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर करें पुत्र प्राप्ति के लिए उपाय

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर, मो.9319305530

22 अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व आ रहा है। इस दिन समस्त वैष्णवजन और भगवान श्रीकृष्ण के भक्त उनके जन्मोत्सव पर उपवास रखते हुए और हरि रुप श्री कृष्ण के भजन करते हुए बड़ी ही खुशियों के साथ मानते हैं, जैसे अपने ही घर में कोई बच्चा जन्म लेने वाला है। जैसे ही अर्धरात्रि का समय आता है, तो उस समय समस्त कृष्ण भक्त स्वयं को भूलकर बस अपने प्रभु में ही खो जाते हैं। अपने भक्तों से अपार स्नेह रखे वाले साक्षात् प्रेममूर्ति श्रीकृष्ण भगवान से यदि उनके भक्त कुछ इच्छापूर्ति चाहते हैं, तो उनकी इच्छाओं को भी वे शीघ्र ही पूर्ण कर देतें है। अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए कृष्ण भक्तों के लिए श्रीकृष्णजन्माष्टमी से बड़ा कोई पर्व नही हो सकता है। वैसे तो इस दिन भगवान् वासुदेव से जो इच्छा माँगी जाए उसे वे शीघ्र ही पूर्ण कर देते हैं। लेकिन जन्मोत्सव होने के कारण पुत्रकामना के दृष्टिकोण से इससे बड़ा पर्व कोई नहीं है।

उत्तम सन्तान की कामना किसे नहीं होती। प्रत्येक दम्पत्ती यह चाहते है कि उनके एक ऐसा पुत्र हो जो उनके कुल की आगे बढ़ाए और कुल का नाम रोशन करे। वर्तमान आर्थिक युग में व्यक्ति को अपने अनुकूल रोजगार प्राप्ति में ही कई वर्ष लग जाते हैं, तब वह विवाह के बारे में सोचता है। यह स्थिति स्त्री एवं पुरुष दोनों की ही है। विवाह में विलम्बता के कारण तथा विवाह के पश्चात् भी उपयुक्त समय पर सन्तान की इच्छा नहीं रखने के कारण कई दम्पतियों को सन्तान प्राप्ति में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही वातावरण एवं खान–पान भी ऐसा हो गया है, जिसके कारण स्त्रियों की प्रजनन क्षमता प्रभावित हुई है, इसके कारण गर्भधारण हो जाने पर भी किसी न किसी कारणवश गर्भनाश हो जाता है। यह समस्या कई स्त्रियों में देखी जा सकती है।

कुछ ऐसे भी दम्पत्ती है जो पुत्र की चाह में कई कन्याओं को जन्म दे देतें है, लेकिन उनकी पुत्र की चाह पूर्ण नहीं हो पाती है। कई बार स्त्री अथवा पुरुष में कई शारीरिक रोग अथवा कभी होने के कारण भी सन्तान प्राप्ति में बाधाएं उपस्थित होती है। ऐसे सभी दम्पतियों के लिए पुत्र प्राप्ति की कामना का श्रीकृष्णजन्माष्टमी से श्रेष्ठ पर्व कोई दूसरा नहीं होगा।

हिन्दू धर्मशास्त्र में मोक्ष प्राप्ति एवं अन्य सामाजिक दायित्व की पूर्णता के लिए पुत्र होने के अनिवार्यता को बतलाया है, लेकिन अपने पूर्वजन्मों के कर्म के अनुसार फल प्राप्त होने के कारण कई व्यक्ति पुत्र सुख का लाभ प्राप्त नहीं कर पातें हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए भी पुत्र कामना के दृष्टिकोण से जन्माष्टमी पर्व का विशेष महत्व हैं यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के अर्धरात्रि में भगवान श्रीकृष्ण के बालरुप लड्डू गोपाल का पूजन करें तो ऐसे भक्तों की पुत्रचिन्ता को भगवान् गोपाल शीघ्र दूर कर देते हैं।

सन्तान प्राप्ति में **गर्भगौरी रुद्राक्ष** का भी अत्यधिक महत्व है। यह रुद्राक्ष साधारण रुद्राक्ष नहीं है। बल्कि प्रकृति प्रदत्त ऐसा रुद्राक्ष है, जो एक विशेष आकृति लिए होता है। इस रुद्राक्ष से मनोनुकूल सन्तान प्राप्ति के परिणाम पिछले काफी वर्षो से देखे और परखे जा रहें हैं। इसलिए सन्तान कामना के लिए इस रुद्राक्ष को जन्माष्टमी के दिन धारण करना विशेष फलप्रद होता है। यदि आपको भी किसी समस्या के कारण सन्तान प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है, कई प्रयासों के पश्चात भी अभी तक आप पुत्र सुख से वंचित हैं, तो इस श्रीकृष्णजन्माष्टमी के दिन भगवान श्री कृष्ण के निमित्त उपवास रखते हुए अर्धरात्रि के समय सर्वप्रथम पूजास्थल में भगवान श्री कृष्ण के बालरूप लड्डू गोपाल एवं गर्भगोरी रूद्राक्ष को स्थापित करें।

तत्पश्चात् 11 बार सन्तान गोपाल स्तोत्र का पाठ करें। और निम्नलिखित मंत्र की 11 मालाओं का जप करें। तत्पश्चात् गर्भगौरी रूद्राक्ष को धारण कर लें एवं अपनी कामना पूर्ण नहीं होने तक नित्य स्तोत्र का पाठ अथवा मंत्र का जप जारी रखें। इस प्रयोग से शीघ्र ही आपकी सन्तान प्राप्ति की मनोकामना पूर्ण होगी।

ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देही में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। ❋❋❋

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय

डॉ. श्रीमती रेखा जैन "आस्था"
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तुशास्त्राचार्य
फोन नं. 0562 3250546

भगवान श्री कृष्ण ने इस पृथ्वी पर अवतार लेकर क्षण–क्षण में अनेकानेक भूमिकाएं धारण की और नयी–नयी लीलाएं दिखायी। भगवान कृष्ण को विभिन्न नामों से जाना जाता है। उनका एक नाम वासुदेव भी है।

सज्जनों की रक्षा, दुष्टों के बिनाश, धर्म की स्थापना, अधर्म के उन्मूलन एवं प्रेम और सौमनस्य धारा को प्रवाहित करने के लिए भगवान कभी मत्स्य, वराह, नृसिंह, कच्छप आदि बनते है। तो कभी कृष्न अथवा परशुराम भारतीय चिंतन परम्परा के मनीषियों का मत है कि भगवान के जो अनेक अवतार है। वे अलग–अलग कलाओं के हैं। किन्तु कृष्णावतार पूर्ण कला का अवतार है क्योंकि कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्।

भगवान कृष्ण ब्रह्माण्ड के सभी लोकों के परम स्वामी है। वे सृष्टि के भिन्न है वह ब्रह्म व शिवजी जैसे बड़े–बड़े देवताओं से भी भिन्न है। क्योंकि जब–जब संसार में पाप बढ़ता है या धर्म की हानि होती है। तब–तब सर्व शक्तिमान् भगवान् श्री हरि का अवतार होता है। वे अवतार लेकर धर्म की स्थापना करते हैं दुष्टों को विनाश करते है तथा भक्तों को सुख देते हैं।

संसार में सुख के प्रति आनन्द के प्रति सबका आक्रर्षण होता है और श्री कृष्ण के जीव में उसकी अभिव्यक्ति बहुत अधिक है। इसलिए वे लोगों की प्रीति को आसाक्ति को अपनी ओर खीचतें है। क्योंकि जहाँ सुख होता है वही मनुष्य का मन खिँचता जाता है। प्रत्येक इंसान ऐसी जगह चाहता है जहां पहुंच कर मनुष्य दुनियां के सब दुखों को सब पीड़ाओं को, सब उत्पीडन को सब शोषणों को, सब अभावों को भूल जायें। मनुष्य के अन्दर एक ऐसा स्थान है जहाँ भगवान स्वयं रहते है। और वह है हृदय! कहा भी गया है।

'हृदि अयंते इति हृदयं ब्रह्म अवतारों में श्री कृष्ण का नाम सबसे अधिक श्रद्धा, भक्ति और आदर के साथ लिया जाता है। श्री कृष्ण को लीला पुरुषोत्तम भी कहा जाता है। हम भगवान् कृष्ण को सदैव चंचलता और हंसने–हंसाने की प्रति मूर्ति के रुप में पाते है। यदि यो कहें कि कृष्ण को कभी भी किसी ने रोते हुएं नहीं देखा है। तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। श्री कृष्ण का जीवन लौकिक दृष्टि से सम्पूर्ण कलाओं से परिपूर्ण है।

कंस के कारागार में जन्म के समय पहरियों का सो जाना, वसुदेव द्वारा नवजात शिशु को नन्द बाबा के घर पहुँचा, मार्ग में शिशु श्री कृष्ण के अंगुष्ठ स्पर्श से यमुना जल का शान्त होना, शकटासुर तृणावर्त और पूतना राक्षसी को दण्ड देना। मांखन चोरी, गोचारण, कालियानाग का विनाश, कंस मर्दन, रास लीला, गोपी प्रेम, राधा प्रेम, ग्वालवालों की मैत्री, मथुरा गमन, महाभारत युद्ध में अर्जुन का सार्थी बनना आदि लीलाएं इतनी महत्वपूर्ण है कि सामान्य दृष्टि में श्री कृष्ण के साथ बिल्कुल बँधे से दिखायी पड़ते है। श्रीमद भागवत में भी स्पष्ट कहा गया है कि बड़े से बड़े देवता भी भगवान को नहीं जान पायें।

भगवान कृष्ण के जन्म से लेकर अन्त तक की प्रत्येक छोटी छोटी घटना से भी सिद्ध होता है कि श्री कृष्ण के रुप में ईश्वर ही समस्त जगत् के नाथ ही परिपूर्ण शक्ति समेत इस भू लोक पर आये थे। यशोदा माँ के अनुभव, द्रोपदी वस्त्रहरण के प्रसंग आदि प्रसंग ऐसे है। जिनके समर्थन व निरुपण की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। वे सर्व शक्ति मान सर्व सामर्थ्यवान्, असम्भव को भी सम्भव कर देने वाले है। वे न्याय विरुद्ध कोई कार्य नहीं करते। वे सर्व प्राणियों पर दया करके धर्म की स्थापना और जीवों का कल्याण करते थे। उनकी प्रत्येक क्रिया में प्रेम और दक्षता थी।

भगवान श्री कृष्ण का श्यामल शरीर अत्यन्त सुन्दर था उनके मुख कमल की शोभा तो निराली थी। उनकी एक–एक मुस्कान पर सभी व्यक्ति न्योछावर हो जाते थे। उनकी मन मोहक मुरली की तान सुन कर मनुष्य तो क्या हर पशु पक्षी प्रकृति का हर जीव मुग्ध हो जाता था।

भगवान कृष्ण गोकुल से अपनी लीलाओं का प्रयोजन पूरा करके मथुरा लौट आये। यहाँ उन्होने कंस तथा उनके क्रूर सहयोगियों का अन्त करके अपने माता–पिता को कारागार से आजाद करवाया। और अग्रसेन को पुनः राजा बनाया।

श्री कृष्ण ने चौसठ दिन में चारों वेद और उनके छहों अंग–शिक्षा, कल्प, व्याकरण निरुक्त ज्योतिष, छन्द, आलेख्य, गणित गान विद्या और वैद्यक सब कुछ सीख लिया। बारह दिन में हाथी घोड़े आदि की शिक्षा प्राप्त की तथा पचास दिनों दसों अंगो सहित धनुर्वेद की शिक्षा ग्रहण की।

द्वारका में रह कर श्री कृष्ण ने रुक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा, कालिन्दी, सत्या, मित्रबिन्दा, भद्रा लक्ष्मणा आदि अनेकों राज कन्याओं से विवाह करके उन्हें रानी पटरानी बनायी तथा अनेको पुत्रों को जन्म दिया। सभी बड़े–बड़े ऋषि, मुनि, महर्षि, योद्धा, ज्ञानी ,धर्मात्मा, विद्वान, नीतिज्ञ, आदि श्री कृष्ण के चरणों में नवमस्तक होकर सुख का अनुभव करते थे। तो हम मामूली इंसान हो कर ऐसा क्यों नहीं करते। ❋❋❋

वास्तु एवं विज्ञान

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**
मो. नं. **09413103883, 09024390067**
e-mail: vastushastri08@yahoo.com

संसार वास्तव में ईश्वर का आभास हैं और यह आभास इस कारण उत्पन्न होता हैं कि हमने अज्ञानता वश संसार को सत्य समझ लिया हैं जो क्षण भंगुर है और प्रत्येक क्षण परिवर्तनीय हैं। यह कदापि सत्य नहीं हो सकता। सत्य होने की एक मात्र शर्त यह हैं कि मनुष्य माया में लिप्त न हो। यह चराचर जगत रूपी नश्वर संसार ईश्वर का मायावी रूप हैं और तमाशा यह हैं कि ईश्वर उस माया से ढक नहीं पाता, वरन हमें ही अथवा हमारे विचारों को ही माया में लिप्त कर देता हैं। हम संसार में एश्वर्य प्राप्त करना चाहते हैं, जो केवल कल्पना हैं, वास्तविकता नहीं। यह हमारे अज्ञान का खेल हैं। हम आत्मा ही हैं अर्थात अमर और अजन्मा।

आदमी बड़ा अजीब हैं, जिस घर में रहता हैं उसकी चिन्ता कम करता हैं और मन्दिर , पूजा स्थल, आस्था केन्द्र की चिन्ता अधिक करता हैं। घर किसी एक का नहीं हो सकता। बनाने वाला कभी अकेले अपने लिए नहीं बनाता। वह आने वाली पीढ़ियों , रिश्तेदारों व अतिथियों को दृष्टिगत रखते हुए ही घर का निर्माण करवाता हैं। घर में जो भी रहता हैं चाहे मालिक हो या नौकर , बच्चे हो या किरायेदार अथवा मेहमान , कायदे से घर सभी का होता हैं किन्तु कोई उसे अपना मानता ही नहीं हैं। जब तक सभी लोग घर से आध्यात्मिक रूप से नहीं जुड़गें , तब तक घर , घर नहीं बनेगा। प्रेम मकान को घर बनाता हैं , प्रेम के अभाव में घर भी मकान बन जाता हैं। घर में प्रेम की तंरगे बहती हैं, मकान में यह सम्भव नही हैं। जब आप ध्यानमग्नता में परमात्मा की उपस्थिति में अपने को गर्वित अनुभव करते हो जब घर के आभामंडल में विस्तार होगा, घर मन्दिर बन जायेगा।

घर में काम के बिना सब कुछ अधूरा हैं। घर व शयन कक्ष का वातावरण काम में सहायक हो , तभी घर आध्यात्मिक रूप से समृद्ध होगा। जब तक मनुश्य ' काम ' की दृष्टि से सन्तुष्ट नहीं होगा, वह जीवन के किसी अन्य क्षेत्र में कामयाब नहीं हो सकता। ऐसा मनुष्य उदास – उदास सा रहेगा , निराशावादी होगा और चिड़चिड़ा हो जायेगा। ऐसा व्यक्ति पागल भी हो सकता हैं , आत्महत्या भी कर सकता हैं। उसे दुनिया में कुछ भी अच्छा नहीं लगता। उसे अपना जीवन निरर्थक व नीरस लगेगा। मनुष्य को अपनी कामेच्छाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए। यदि कहीं कोई कमी हैं तो उसे विज्ञान की सहायता लेनी चाहिए। ज्योतिष विज्ञान , वास्तु विज्ञान , अंकशास्त्र , हस्तरेखा , रेकी (स्पर्श चिकित्सा) , एंक्यूपक्चर या अन्य वैकल्पिक चिकित्सा विज्ञान की सहायता से अपनी इच्छापूर्ति कर सकता हैं।

ज्योतिष विज्ञान और अंक विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। कर्मकांड, मंत्रोचार एंव गणना द्वारा मनुष्य को उसकी दुःख तकलीफों से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया जाता हैं। इसकी सहायता से मनुष्य आने वाले बुरे समय के प्रति सचेत व सावधान हो सकता हैं। अनुष्ठान , मंत्रोचार , रत्न धारण आदि के माध्यम से वह अपना कल सुधार सकता हैं।

इसी प्रकार वास्तु शास्त्र वस्तुतः वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं जिसका मनौवैज्ञानिक प्रभाव अधिक होता हैं। वास्तु शास्त्र वस्तुतः कला भी हैं और विज्ञान भी। चूंकि सभी कलाओं और विज्ञानों का जन्म शास्त्रों से ही हुआ हैं इसलिए वास्तुविद्या को 'शास्त्र' कहा गया हैं , किन्तु आज यह 'शास्त्र' से अधिक विज्ञान और शिल्प की दृष्टि से कला बन चुका हैं। भवन निर्माण, साज–सज्जा व रंग रोगन में यह विज्ञान अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा हैं।

हम जानते हैं कि एक शिल्पकार (आर्किटेक्ट) सुन्दर भवन बना सकता हैं किन्तु सुख शान्ति की गारन्टी केवल 'वास्तुविद्' ही दे सकता है।

वास्तु शास्त्र वस्तुतः काफी पुराना हैं। वास्तु शास्त्रीय सिद्धान्त किसी न किसी रूप में हर युग और हर देश में प्रभावी रहा हैं। किसी भी वस्तु के निर्माण से पूर्व कुछ मूलभुत सिद्धान्तों का प्रतिपादन

शेष पेज 18 **पर**.....

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतपय स्टेट बैंक खाते में 10039621098, आगरा जमा
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा
फोन : 0562–2856666, 2525262, 9719005262
ई मेल : maheshparasar@anushthan.in

कुण्डली में जानें कौन हैं आपके ईष्ट

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता
मो. 9319221203

जन्मकुण्डली के आधार पर जातक विशेष के आराध्य को ज्ञात करना न केवल सैद्धान्तिक दृष्टि से उपयोगी एवं रोचक है, वरन् उस जातक के लिए भी उसी आराध्य की उपासना करना शीघ्र फलदायी होगा, क्योंकि प्रभु की उपासना सटीक कारण आधुनिक मनोविज्ञान अथवा अन्य विज्ञान के माध्यम से खोज पाना केवल कठिन है, वरन् लगभग असम्भव ही है। यह केवल एस्ट्रो साइकोलॉजी के माध्यम से भली–भाँति ज्ञात किया जा सकता है। इसी कारण कहा जाता है कि जहाँ विज्ञान समाप्त होता है, वहीं से ज्योतिष विज्ञान आरम्भ होता है।

व्यवहार में जब हम देखते हैं कि एक ही दम्पती की सन्तानों में से एक आस्तिक है, तो दूसरी घोर नास्तिक अनुष्ठानादि का विचार किया जाता है। जब नवम और पंचम दोनों शुभलक्षण युक्त होते हैं, तभी आस्तिकता का प्रादुर्भाव होता है। जब उक्त भाव औश्र उनके स्वामी क्रूर या पाप ग्रहों से दूषित हों, तो नास्तिकता का अंकुरण प्रस्फुटित होता है और जब इन पर शुभ भावेश या ग्रह की दृष्टि या अन्य सम्बन्ध न हो, तो उक्त अंकुरण पल्लवित होकर नास्तिकता रुपी वृक्ष के रुप में प्रकट होता है।

पंचम स्थान से ही आस्तिकता होती है, तब पूर्ण आस्तिक मनोवृत्ति के साथ प्रगाढ़ भक्ति का जन्म होता है। पूर्ण आस्तिक व्यक्ति का आराध्य क्या होगा? यह भी एस्ट्रो–साइकोलॉजी के सिद्धान्तों के आधार पर ज्ञात किया जा सकता है। प्रसंगवश वैदिक साहित्य में 33 कोटि देवताओं की चर्चा प्राप्त होती है, जिसके फलस्वरुप वैदिकोत्तर साहित्य में 33 करोड़ देवता भ्रांतवश मान लिए गए हैं। हमारी धारण है कि प्रायः सभी उपासना भक्त करते हैं, किन्तु उपासना से प्रभु की भक्ति और कृपा विरले को ही प्राप्त होती है, ऐसा क्यों होता है? कारण की विवेचना करें, तो हमें यह प्रतीत होगा कि हमारे लिए जो आराध्य है, हम उन्हें खोजकर किसी अन्य की आराधना करने लग जाते हैं या फिर हम सभी को पूजने लगते हैं। **'एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाये'** ऐसा करने से जो हमारे लिए शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव हैं, वे भी हमसे दूर रहते हैं तथा इसी कारण हमें शीघ्र फल की प्राप्ति नहीं होती है। यदि भक्ति का हीसही दिशामें प्रादुर्भाव नहीं होगा, तो हमें शक्ति की प्राप्ति कहाँ से होगी।

कुण्डली में पंचम भाव अधिपति, पंचम स्थान में स्थित ग्रह, नवम भाव अधिपति एवं नवमभाव में स्थित ग्रह तथा विंशांश कुण्डली के आधार पर हम अपने आराध्य का निश्चय कर सकते हैः

शेष पेज 20 **पर**.....

शनि की धीमी चाल एवं तेल चढ़ाने का महत्व

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
फोन. 9412257617, 0562-2571618

शनिदेव नवग्रहों में सबसे अधिक भयभीत करने वाले हैं। परन्तु यदि शनि देव प्रसन्न रहें तो व्यक्ति माला माल हो जाता है। शनि देव दक्ष प्रजापति की पुत्री संज्ञा देवी और सूर्यदेव के पुत्र हैं। इनका प्रभाव एक राशि पर ढ़ाई वर्ष और साढे साती के रुप में लंबी अवधि तक भोगना पड़ता है। शनि देव की गति अन्य ग्रहों से मंद होने का कारण इनका लंगड़ाकर चलना है। वे लगड़ाकर क्यों चलते हैं? इसके संबंध में सूर्यतंत्र में एक कथा है–एक बार सूर्य देव का तेज सहन न कर पाने की वजह से संज्ञा देवी ने अपने शरीर से अपने जैसे ही एक प्रतिमूर्ति तैयार की और उसका नाम स्वर्णा रखा। संज्ञा देव ने उसे आज्ञा दी कि तुम मेरी अनुपस्थिति में मेरी सारी संतानों की देखरेख करते हुए सूर्य देव की सेवा करो एवं पत्नि सुख भोग। यह आदेश देकर वह अपने पिता के घर चली गई। स्वर्णा ने भी अपने आप को इस प्रकार ढाला कि सूर्य देव भी यह रहस्य न जान सकें। इस बीच सूर्य देव से स्वर्णा को पाँच पुत्र और दो पुत्री हुई स्वर्णा अपने बच्चों पर अधिक एवं संज्ञा के बच्चें पर कम ध्यान देने लगी।

एक दिन संज्ञा के पुत्र शनि को तेज भूख लगी तो उसने स्वर्णा से भोजन माँगा। तब स्वर्णा ने कहा कि अभी ठहरो मैं भगवान का भोग लगा लूं और तुम्हारे छोटे भाई–बहनों को खिला दूँ। फिर तुम्हें भोजन दूगी। यह सुनकर शनि को क्रोध आ गया और उन्होनें माता को मारे के लिए अपना पैर उठाया तो स्वर्णा ने शनि को श्राप दिया कि तेरा पाँव अभी टूट जाए। माता का श्राप सुनकर शनिदेव डरकर अपने पिता के पास गए और सारा किस्सा कह सुनाया। सूर्यदेव तुरंत समझ गए कि कोई भी माता अपने पुत्र को इस तरह का शाप नहीं दे सकती। इसलिए उनके साथ उनकी पत्नी नहीं कोई और हैं। सूर्य देव ने क्रोध में आकर पूछा कि बताओं तुम कौन हो सूर्य का तेज देखकर स्वर्णा घबरा गई और सारी सच्चाई उन्हें बता दी। तब सूर्य देव ने शनि को समझाया कि स्वर्णा तुम्हारी माता नहीं है लेकिन माँ के समान है। इसलिए उनका दिया शाप व्यर्थ तो नहीं होगा परंतु यह इतना कठोर नहीं होगा कि टांग पूरी तरह से अलग हो जाय। तुम आजीवन एक पैर से लंगड़ाकर चलते रहेंगे।

शनि देव पर तेल क्यों चढ़ाया जाता है? इस संबंध में आनंद रामायण में एक कथा का उल्लास मिलता है जब भगवान राम की सेना ने सागर सेतु बांध लिया तब राक्षसओं से हानि न पहुँच सके उसके लिए श्री हनुमान जी पर उसकी देखभाल की पूरी जिम्मेदारी

शेष पेज 20 **पर**.....

पिरामिड यंत्र का चमत्कारिक प्रभाव

श्रीमती रेनू कपूर
वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

पिरामिड यंत्र एक अत्यन्त प्राचीन व अदभुत व्यावहारिक कला है पिरामिड़ को उचित दिशा अनुसार रखने मात्र से व्यक्ति आस–पास के वातावरण में पूर्ण सामंजस्य स्थापित कर अच्छा स्वास्थ्य, प्रसन्नता व सुख समृद्धि का अनुभव प्राप्त करता है। यदि व्यक्ति में सकारात्मक सोच और दृढ़ विश्वास है तो अवश्य ही उचित दिशा में रखे पिरामिड़ के उपयोग से व्यक्ति को अपनी परिस्थितियाँ परिवर्तित दिखाई देती हैं जीवन के प्रति व्यक्ति के दृष्टिकोण में वदलाव आता है क्योंकि मानसिक स्तरीय सुधार अत्यधिक शक्तिशाली होता है। वैज्ञानिक भी इस बात से पूर्ण रुप से परिचित है कि जीवन का महत्वपूर्ण आधार ऊर्जा है और यह पिरामिड ऊर्जा के कारण प्राप्त की जा सकती है। ऋषि मुनियों ने पिरामिड की चमत्कारिक ऊर्जा को जानकर यह सिद्ध किया थ कि पिरामिड की आकृति से प्रकाश व ऊर्जा शक्ति का प्रसार होता है। पिरामिड की आकृति पृथ्वी और आकश दोनों ओर से शक्तिशाली ऊर्जा को ग्रहण कर चमत्कारिक ऊर्जा को प्रसार करने का सशक्त माध्यम मानी गई है। मन्दिर, गिरिजाघर आदि स्थलों के शिखर पिरामिड़ आकृति के बने होते है और यही कारण होता है कि व्यक्ति को मंदिर में प्रवेश करते ही ईश्वरीय ऊर्जा के अत्यधिक शक्तिशाली होने के कारण एक सुखद शान्ति का अहसास प्राप्त होता है।

पिरामिड़ यंत्र अपनी विशिष्ट आकृति के कारण उपयोगी ऊर्जा को एकत्र करता है, आकाशीय उपयोगी ऊर्जा के कारण पिरामिड़ के अन्दर विचित्र प्रकार का कंपन होता है जो व्यक्ति के मन व शरीर को असीम शान्ति प्रदान करता है। पिरामिड़ निर्मित भवन में यदि थका व्यक्ति विश्राम करें तो कुछ समय बाद उसकी थकान दूर हो जाती है और वह स्वयं अपे आप में एक नई शक्ति का संचार अनुभव करता है पिरामिड़ ऊर्जा शक्ति मानव को निरन्तर सक्रिय बनाने में और जीवन को सरल व सुखमय बनाने में अत्यन्त सहायक होती है। पिरामिड़ यंत्र ऐसी बस्तु है जिसकी ऊर्जा शक्ति दूर क्षेत्र में व्यक्ति की सहायता करती है, यदि भवन में कोई भी वास्तु दोष हो तो पिरामिड़ यंत्र के सही दिशा उपयोग से वास्तुदोष भी नष्ट हो जाते हैं। पिरामिड़ का उपयोग व्यक्ति को सुख समृद्धि और सफलता की प्राप्ति कराता है। अनेक प्रकार के पिरामिड़ के सफल प्रयोग इस प्रकार है अष्टधातु संयुक्त पिरामिड़ को सर्वोत्तम पिरामिड़ माना जाता है नौ संयुक्त पिरामिड़ को एक में निर्मित्त कर उस पर स्वर्ण की पालिश होने से उस पिरामिड़ की शक्ति बढ़ जाती है उस पिरामिड़ को वाहन में लगाने से दुर्घटना से बचाव होता है और यात्रा सुखद और सफल होती है। पूजा के स्थान पर रखने से मानसिक शान्ति व अध्यामिकता में सफलता प्राप्त होती है।

स्फटिक पिरामिड़ का उपयोग ऐसे स्थान पर लाभप्रद माना जाता है जहाँ व्यावसायिक स्थल अथवा कार्यालय या भव में मन अशान्त रहता हो कार्य करने में मन ना लगता हो, लड़ाई झगड़े होते हो, वार–वार घर में विखराव होता हो। स्फटिक पिरामिड पूजा के स्थान पर रखने से और नित्य पूजा अर्चना करने से शीघ्र ही भवन में अथवा कार्यालय आदि में वास्तु दोष नष्ट हाकेर शान्ति व स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

ताँबे का पिरामिड़ अनेक आकार में निर्मित किया जाता है ताँबे के पिरामिड़ में चारों ओर देवी देवताओं की तस्वीरे व देवी देवताओं के चित्र बने होते हैं। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह अत्यन्त लाभकारी माना जाता है विद्या अध्ययन के समय इसे मेज पर सामने रख कर अध्ययन करने से बच्चों में स्मरण शक्ति और ज्ञान की वृद्धि होती है वह तीक्ष्ण बुद्धि का मालिक बनता है।

पीतल का बंद पिरामिड भी बिना तोड़–फोड़ के वास्तु दोष दूर करने का सरल उपाय माना गया है यह पिरामिड़ भी दिशा दोष को दूर कर भवन को अनेक प्रकार से लाभ पहुँचाता है।

पिरामिड़ शक्ति व्यक्ति के भवन, कार्यालय, अथवा दुकान आदि में धन सम्पत्ति की बुद्धि करने व जीवन की हर दिशा में नये अवसर प्रदान कर पिरामिड़ में सुख समृद्धि की प्राप्ति कराती है वास्तव में पिरामिड़ यंत्र एक चमत्कारिक यंत्र है। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपनाभवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

यज्ञों की लौकिक पारलौकिक उपादेयता

पं. देव स्वरुप शास्त्री
ज्योतिष शास्त्राचार्य , वास्तु शास्त्राचार्य
अंक विशारद
मो. 9219634387

भारतीय संस्कृति और सद्शास्त्रों में यज्ञों की अपार महिमा वर्णित है। प्राचीन काल से ही लौकिक और पारलौकिक सुख के लिए यज्ञ–यागादि शुभ कार्मो का विधान किया गया है। यज्ञादि कर्म के द्वारा इन्द्रियाँ सात्विक बन जाती है। और चित्त की कलुषता दूर होकर ज्ञान का आलोक प्रकाशित होता है। जिस प्रकार अनुष्ठान द्वारा देवगण प्रसन्न हों, सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो वह अनुष्ठान यज्ञ कहलाता है।

इतना ही नहीं सृष्टि की उत्पत्ति यज्ञ का फल कही जाती है। जिसे ब्रह्माजी ने किया था। यही कारण है कि उन्होंने सृष्टि के प्रारम्भ में ही मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामूहिक हित के लिए मानव रचना के साथ ही यज्ञ कर्म का विधान भी निश्चित कर दिया। इस प्रकार शरीर और अन्तःकरण की शृद्धि तथा जीवन में दिव्यता के आधान हेतु यज्ञ अनुष्ठान अत्यन्त आवश्यक है।

पद्मप् पुराण (सृष्टि खंड 3/124) में कहा गया है कि यज्ञ देवताओं का पोषण होता है। यज्ञ द्वारा वृष्टि होने से मनुष्यों का पालन होता है। इस प्रकार विश्व का पालन पोषण करने के कारण ही यज्ञ कल्याण के हेतुः–

"यज्ञेनार्प्यायता देवा वृष्टयुत्सर्गेण मानवाः।
आप्यायनं वै कुवीन्ति यज्ञः कल्याणहेतवः।।

ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञों वै विष्णुः कहकर यज्ञ को विष्णु भगवान का रुप माना है। यह परमात्मा की प्राप्ति का प्रमुख साधन है। यज्ञ के द्वारा ही हिदृय की आत्म ज्योर्ति जाग्रत होती है। जिससे मन का सारा आज्ञानान्धकार विनष्ट हो जाता है।

तथा अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोषों में शुद्धि आती है।

गीता में भगवान कृष्ण ने लिखा है "यज्ञ अहम्" अर्थात मैं यज्ञ हूँ। इससे यह स्पष्ट है कि यज्ञ साक्षात् भगवान का ही श्री विग्रह है।

धर्मशास्त्रों में यज्ञों के विविध प्रकार बताए गये हैं जिनमें प्रमुख यज्ञ हैः– सोमयाग, वाणपेय, राजसूय, अश्वमेध आदि यज्ञ प्रमुख हैं। अन्य महत्व पूर्ण यज्ञों की दीर्घ श्रृंखला में विश्वजित, अभिजित सद्यः क्री, प्रकी, अर्धमास, एकरात्र, दि्टरात्र, पुत्रेष्टि आदि विशेष रुप से उल्लेखनीय है।

तभी तो श्रीमद् भागवत गीता (18/6) में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है– कि यज्ञ दान और तपरुप कर्मो को आसक्ति और फल की कामना का त्याग करके लोकहित के निमित्व करना चाहिए। जो यज्ञ सर्व भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामय की त्यापक अवधारणा को लक्ष्य करके सम्पन्न किये जाते हैं। वे सात्विक यज्ञ कहलाते है। ❋❋❋

सूर्यनमस्कार ॐ प्रणामासन

योगाचार्य प्रभुदयाल गुप्ता
Ph: 0562-2410609, 94110446771

सप्तम स्थितिः– भुजंगासनः–ओउम् रिण्य गर्भाय नमः मंत्र का उच्चारण करते हुये दोनों हाथों को कमर के बराबर आसन पर टिकायें, कोहनियां सीधी रहें, वक्ष को सामे उठाते हुये गहरा श्वांस भरें और दोनों कन्धों का खिंचाव भी पीछे की ओर रखें, गर्दन ऊपर की ओर रखें, दोनों पैरों के पंजे पीछे खिचें हुये, नाभि से ऊपर का भाग ऊपर की ओर खिंचा रहे और नाभि से नी का भाग आसन पर जमा रहें और हमारे शरीर की आकृति एक भुजंग की तरह हो जाये। इस आसन से कमर के विकार नष्ट होगें, हर्निया, आंत्र रोग नहीं होंगे, वक्ष रोग भी नहीं होंगे व मधु मेह रोग का निवारण होगा क्योंकि इस मुद्रा में पेनक्रिया(Pancreas's) का भी अच्छा खिंचाव होता है।

8. अष्टम स्थितिः पर्वतासनः–ओउम् मरीचये नमः मंत्र का उच्चारण करें दोनों हाथ व दोनों पैरों को उसी स्थान पर रखें और कमर को एक पर्वत की तरह ऊपर की ओर अधिक से अधिक उठा दें। सिर नीचे झुका रहे व ठुड्डी सीनें से लगी रहें, दोनों पैरों की एड़ी व दोनों पंजे आसन से लगे रहें, पूरे शरीर का भार दोनों हाथ और दोनों पैरों पर रहें, अधिक से अधिक खिंचाव ऊपर की ओर रहे गहरा श्वास लें और जब तक रुकें तब तक श्वास अछर रहे। फिर अगले आसन में जायें। इस आसन के द्वारा कमर, घुटने, स्नायु सबल और लचीले बनते है। हाथ पैर पुष्ट होते हैं। इस प्रकार इस आसन से कमर, वृक्क (गुरदे Kidney), यकृत व उदर विकार नहीं होते।

❋❋❋

ससुराल गेंदा फूल है- क्यों?

सुरेश अग्रवाल
मो. 9897137268

सिर्फ भारतीय लोक गीतों में ही देश की संस्कृति और प्रकृति के दर्शन होते है और उनके बोलों की मिठास लम्बे समय तक हमारे दिलों में रस पैदा करती रहती है। होली की मस्ती हो, सावन की मल्हारे हों या शादी–विवाह के समय गाई जो वाली छेडछाड से भी गालियाँ हों– सभी गुदगुदी पैदा करे के लिए पर्याप्त हैं। गुनगुनाइए लोक गीत की ये पक्तियाँ–

"सैंया छेड देवे, ननद चुटकी लेवे,
ससुराल गेंदा फूल,
सास गारी देवे, देवर समझा लेवे,
ससुराल गेंदा फूल।"

ससुराल शब्द से ही लड़कियों के दिलों में प्रश्न वाचक चिन्ह बन जाता है– कैसी होगी ससुराल और वहाँ के लोग? एक ओर तो होती है– दाम्पत्य जीवन में प्रवेश की खुशी, तो दूसरी ओर–ससुराल में मिलने वाली जिम्मेदारियों की आहट।

ससुराल को गेंदा फूल ही क्यों कहा जाता है? गेंदा एक ऐसा फूल है, जो केवल फूल हीं– बल्कि एक ऐसा गुच्छा है, जिसकी पत्तियाँ मजबूती से आपस में जुड़ी हुई हैं। आँधी अथवा बरसात भी उन्हें एक दूसरे से अगल नहीं कर पाती हैं। गेंदा फूल अन्य फूलों की अपेक्षा अधिक समय तक तरो ताजा बना रहता है। यह जल्दी सूखता भी नहीं है– सूखने के बाद जल्दी झड़ता भी नहीं है। गेंदा की मिंगी इसकी पत्तियों को खिलने से मुरझाने तक अपने से अलग नहीं होने देती है। इस फूल के प्रकृति प्रदत्त गुण में कई रहस्य छिपे हुए है।

अन्य फूलों की तुलना में इस फूल में पत्तियों की संख्या भी अधिक होती है, जो ससुराल के अनेक रिश्तों की ओर इशारा कर रहा होता है– यानी पति, सास–ससुर, जेठानी–जेठ, देवरानी–देवर, ननद–ननदोई और अन्य रिश्तेदार भी। ससुराल में सभी आपको चारों ओर से सुरक्षा देंगे, अपनापन देगें, प्यार देगे, सँभालेगे और आपकी मदद भी करेंगे।

प्रत्येक परिवार मायका भी होता है और ससुराल भी। मायके को गेंदा फूल नहीं कह सकते क्योंकि उसकी बेटी रुपी पत्ती को उस फूल से विवाह के बाद अलग होना ही पड़ेगा। एक बात और– यदि गेंदा फूल में से कोई पत्ती नोच ली जाती है, तो उस पत्ती की जगह कोई नई पत्ती आ ही नही सकती। उस नुची हुई पत्ती के खाली स्थान से यह सहज ही जाना जा सकता है कि इस स्थान से पत्ती नोची गई है और उस अलग की गई पत्ती का अस्तित्व जल्दी ही मिट जाता है। यही जीवन क्रम है। संयुक्त परिवार विचार धारा की शिक्षा गेंदा फूल से ही ली जा सकती है, किसी अन्य से नहीं।

ससुराल के रिश्ते नाजुक, लेकिन प्यारे और गहरे होते हैं। खुशहाल और सम्पन्न ससुराल वही है, जहाँ सभी सदस्य (पत्तियाँ) मन से गुच्छे की तरह एक दूसरे से जुड़े रहते हैं और उस गुच्छे का आधार मुखिया (मिंगी) उनको अपने सीने से लगाए रखता है, पोषण करता है, आश्रय देता है। कष्ट के समय में भी सदस्य अपने मुखिया से चिपके रहते हैं और मुखिया भी उनको अपने से अलग नहीं करता है।

❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपनाभवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतपय स्टेट बैंक खाते में 10039621098, आगरा जमा

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा
फोन : 0562–2856666, 2525262, 9719005262
ई मेल : maheshparasar@anushthan.in

16 अगस्त - 15 सितम्बर

मेष (Aries)– चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– नेत्र कष्ट जैंसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। मानसिक अशांति बनी रहेगी, और कारोबार ठीक से चलेगा। इस मास के अन्त मे हानि होना संभव हैं।

वृष (Taures)– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आपको अपनी पत्नि से लाभ की प्राप्ति हो?गी। प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा। हानि होने की भी संभावना रहेगी। यात्रा मे चोट लगना संभव हैं।

मिथुन (Gemini)– क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा। सन्तान पक्ष से चिन्ताए बनी रहेगी। इस मास मे स्वास्थ्य ठीक रहेगा। घरेलू परेशानिया निरंतर रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

कर्क (Cancer)– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– प्रियजनों से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। कारोबार ठीक चलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी। वायुविकार जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे।

सिंह (Leo)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास मे आपको राज भय रहेगा। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। सन्तान पक्ष अच्छा रहेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। आपको अपनी पत्नि से लाभ की प्राप्ति होगी।

कन्या (Virgo)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास मे स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा। कारोबार या व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना होगी। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। धन लाभ का सुख प्राप्त होगा।

तुला (Libra)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में पित्तविकार जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। नई-नई योजनाओं से आपको हानि प्राप्त होगी। स्थानान्तर का विचार होगा। कारोबार में रूकावटें आयेंगी एवं नुकसान होने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक (Scorpio)– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सुख मिलेगा। कारोबार में बदलाव होने की संभावना रहेगा। फालतू की चिन्ता में डूबे रहेगें।

धनु (Sagittarius)– ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– इस मास में आपको शारीरिक कष्ट होने का भय रहेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय रहेगा। मानसिक तनाव रहेगा। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। कार्यान्तर से लाभ मिलेगा।

मकर (Capricorn)– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान पक्ष से अच्छी सूचनाओं की प्राप्ति होगी।

कुम्भ (Aquarius)– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– इस मास मे स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। कारोंबार में लाभ की प्राप्ति रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार या व्यवसाय मे रूकावटें आने की संभावना रहेगी।

मीन (Pisces)– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची– इस मास मे स्वास्थ्य उत्तम नही रहेगा। घरेलू परेशानियां लगी रहेगी। कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। मानसिक तनाव रहेगा। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे। यात्रा मे चोट लगना संभव हैं।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अगस्त	सितम्बर
16 कंजली तृतीया, **17** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, **20** षष्ठी हलष्ठी, **21** शीतला सप्तमी, **22** श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत, **23** गोगा नवमी **25** अजा एकादशी व्रत, **26** प्रदोष व्रत, गौवत्स द्वादशी, **29** अमावस्या व्रत (पोला त्योहार), **31** हरतालिका तीज व्रत	**1** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **2** ऋषि पंचमी, **3** सूर्य षष्ठी, **5** राधाष्टमी, गोगा नवमी, शिक्षक दिवस, **8** जल झूलनी एकादशी व्रत, स्वामी शिवानंद जयंती, **9** प्रदोष व्रत, वामन द्वादशी, पं. गोविन्द बल्लभ पंत जयंती, **11** पूर्णिमा व्रत, अनन्त चतुर्दशी, शिरडी वाले साई बाबा जं., श्री बिनोबा भावे जयंती, **12** पूर्णिमा श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ, **14** भारतीय हिन्दी दिवस, **15** भारतीय इन्जीनियर्स ड

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नहीं हैं।

गृह प्रवेश मुहूर्त
नहीं हैं।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
अगस्त – 4, 6, 8, 10, 14, 31 सितम्बर – 2, 4 8, 10, 12

नामकरण संस्कार मुहूर्त
अगस्त – 8, 15, 24, 31 सितम्बर – 4, 8, 14, 15

सर्वार्थ सिद्ध योग

अगस्त	सितम्बर
22 ता. 14:19 से सू.उ. तक 31 ता. 6:21 से सू.उ. तक	09 ता. सू.उ. से 24:23 तक

16 सितम्बर - 15 अक्टूबर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-इस मास में आपको प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। व्यय अधिक रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में शारीरिक कष्ट रहेगा। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। पति से मन-मुटाव होने की संभावना रहेगी। यात्रा का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में उदर विकार जैसे रोग से आप ग्रस्त रहेंगे। कारोबार में अधिक बदलाव होने की संभावना रहेगी। व्यय अधिक रहेगा। मास के अन्त में विशेष खर्च होने की संभावना रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। योजनायें असफल होंगी। व्यय अधिक रहेगा। शत्रु आप पर हावी रहेंगे।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति बनेगी। इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता लगी रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में नेत्र कष्ट, वायु विकार, जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कारोबार ठीक चलेगा। प्रियजनों से मेल-जोल बढ़ेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में कारोबार ठीक होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में मुकदमें में हानि होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट एवं कारोबार में रुकावटें आयेगी। शत्रुओं पर हावी रहेंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। सन्तान पक्ष से चिन्तायें लगी रहेगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी। वायु विकार, नेत्र कष्ट जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कारोबार में रुकावटें आयेंगी एवं हानि होना भी संभव है। नौकरी में बदलाव अधिक आने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - सारी योजनायें असफल रहेंगी। इस मास में मन परेशान रहेगा। चोट भी लग सकती है। यात्रा में कष्ट आयेंगे। अर्थलाभ की प्राप्ति होगी। नौकरी में हानि होने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

सितम्बर	अक्टूबर
17 विश्वकर्मा पूजन,	**1** ललिता पंचमी व्रत,
25 प्रदोष व्रत,	**2** छठा नवरात्र, महात्मा गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती,
27 अमावस्या श्राद्ध, विश्व पर्यटक दिवस,	**3** सरस्वती पूजन, **4** दुर्गाष्टमी, **5** महानवमी, **6** विजयदशमी, **7** पापकुशा एकादशी व्रत,
28 शरदीय नवरात्र प्रारम्भ, अग्रसेन जयंती,	**8** भारतीय वायु सेना दिवस,
30 बैंक अर्द्ध वार्षिक लेखाबंदी, श्री गणेश चतुर्थी व्रत	**9** प्रदोष व्रत, **11** काजौगरी व्रत, शरद पूर्णिमा व्रत, कार्तिक स्नान प्रारम्भ **15** करवाचौथ व्रत,

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नहीं हैं।
गृह प्रवेश मुहूर्त
नहीं हैं।
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
सितम्बर – 29, 30
अक्टूबर – 2, 3, 8, 12, 13
नामकरण संस्कार मुहूर्त
सितम्बर – 4, 8, 14, 15, 19, 23, 29
अक्टूबर – 6, 7, 9, 12

सर्वार्थ सिद्ध योग

सितम्बर	अक्टूबर
16 ता. सू.उ. से 15:51 तक	07 ता. सू.उ. से 30:01 तक
19 ता. सू.उ. से 24:00 तक	13 ता. सू.उ. से 21:59 तक
28 ता. सू.उ. से 13:36 तक	

'इधर का न उधर का'

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा

मो. 9412263505

" जो स्वजनों को छोड़कर परायें को अपनाता है वो नष्ट हो जाता है।" एक जंगल में एक गीदड़ रहता था। वह बहुत चतुर तथा चालाक था, उसे अपना घर छोड़कर बाहर घूमने की बुरी आदत बचपन से ही पड़ गयी थी। उस गीदड़ का बाप उसे ढूडने जाता, तो वह कीं पर भी छिपकर बैठ जाता और अपने बाप के हाथ नहीं आता था। उसकी मां उससे बहुत प्यार करती थी, जब वह रात में किसी भी समय अपने घर आता, तो उसे सिर्फ उसकी मां ही अपने पति की मार से बचाती थी।

कभी–कभी उसका बाप जब उससे मार–पीट करने लगता तो उसकी मां उसे उसके चंगुल से छुड़ाती थी और रो–रोकर स्वयं को हल्कान कर लेती थी।

मां के इतने प्यार से उस गीदड़ को और भी अधिक आवारा बना दिया था। अब वह इतना निर्भीक हो गया था कि वह अपने बाप का कहना भी नहीं मानता था। वह अपने साथ के युवा गीदड़ों के साथ सुबह निकालता था और सारे दिन जंगलों की सैर करता, इधर–उधर घूमता और अपना समय बरबाद करता फिरता था।

एक दिन वह अपने साथियों के साथ घूमता, मौज–मस्ती करता हुआ एक गांव के निकट जा पहुँचा। वहां उन्होंने कई नई–नई चीजें देखीं; जैसे–गधा, बकरी, मनुष्य आदि। वे सभी वहां एक–दूसरे से पूछने लगे कि यहां तो अजीब–अजीब चीजें देखने को मिल रही हैं। वे उनसे अपना दिल बहलाते रहें, उन्हें याद नहीं रहा कि अपने–अपने घर भी लौटना है। उनको वहीं शाम हो गयी।

जब वे वहां से लौटने लगे तो रात हो चली थी। रात अंधेरी थी इसलिए वे एक–दूसरे को रास्ता बताते हुए अपने घर (जंगल) की तरफ चलने लगे।

चलते–चलते अचानक उस गीदड़ का पैर फिसला, (जो कि अपने मां–बाप का कहना नहीं मानता था) और वह एक धोबी की नांद में गिर गया, जिसमें धोबी अपने कपड़े रंगा करता था। धोबी ने उस नांद में कपड़ों को नील लगाया था जिस कारण उसमें अभी भी नील का पानी भरा हुआ था।

गीदड़ जब नांद में गिर गया तो उसने बहुत शोर मचाया, परन्तु उसके साथी अंधेरे के कारण उसे न खोज सके, अन्त में वे सभी परेशान होकर अपने घर की ओर चले गये।

उधर वह गीदड़ नांद में पड़ा–पड़ा अपने हाथ–पैर फेंक रहा था, प्रयास कर रहा था कि वह किसी तरह इस नांद से निकल जाये। आज उसे अपने बाप की पिटाई और मां का प्यार याद आ रहा था। वह सोच रहा था। कि यदि वह अपने बाप तथा मां का कहना मान लेता, तो आज यह दिन देखने को न मिलता।

वह सर्दी के कारण कांप रहा था। और अपने कर्मो को रो रहा था। वह बार–बार नांद से निकलने का प्रयास करता और थककर फिर बैठ जाता। जब बहुत परिश्रम करने के बाद वह बिल्कुल थककर चूर हो गया और भोर होने को आयी यानी प्रातःकाल होने लगी तो नींद गीदड़ के दिमाग में एक युक्ति उत्पन्न हुई

वह सोचने गला कि अब दिन निकल आयेगा और धोबी आयेगा। मुझे अपनी नांद में पड़ा देखकर मारेगा और हो सकता है कि वह मुझे जान से ही मार दे। यह सोचकर अब उसके प्राण सूखने लगे और वह नांद में इस प्रकार लेट गया मानों कोई मृत गीदड़ पड़ा हो।

उसका यह स्वांग उसकी जान बचाने में सहायक सिद्ध हुआ। जब सवेरा हुआ तो धोबी रोज मर्रा की तरह अपने कपड़े धोने अपनी नांद के पास आया। गीदड़ को मरा देखकर वह बड़ा दुःखी हुआ। धोबी बड़ा दयालु था वह सोचने लगा कि यह बेचारा यहां क्यों आ गया और अगर आ गया था तो मेरी नांद में क्यों गिर गया और गिर गया तो यह मर क्यों गया था?

यह सोचता–सोचता वह उस गीदड़ को उठाकर जंगल की तरफ किसी गड्डे में फेंकने के लिए चल दिया।

गीदड़ ने जब यह देखा कि धोबी उसे जंगल की तरफ ले जा रहा है, तो धोबी के कंधे पर लटका–लटका सोच रहा था कि बेचारा धोबी कितना दयालु है, जिसने मुझे अपनी नांद में पड़ा पाकर भी कुछ नहीं कहा और उल्टा मुझे अपने कंधे पर लादकर मेरे ही घर की ओर ले जा रहा है। यदि कोई दूसरा मनुष्य होता तो वह मुझे अवश्य जान से मार देता और आज मैं इस दुनिया में नहीं होता और न ही किसी मनुष्य की सवारी करता।

अब गीदड़ की जान में आनी शुरु हो गयी थी। जंगल में कुछ दूरी पर जाकर धोबी ने उसे मरा हुआ समझकर एक गड्डे में फेंकना

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतीय स्टेट बैंक खाते में 10039621088, आगरा शाखा में जमा

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा

फोन : 0562–2856666, 2525262, 9719005262

ई मेल : maheshparasar@anushthan.in

❋❋❋

चाहा, परन्तु उसके हृदय में, फिर एक बार दया उत्पन्न हुई कि यदि मैं इस गड्डें में फेंका तो गांव के कुत्ते आदि इसका मांस तक नहीं छोंडेंगे, और यह बेचारा मरा हुआ भी दूसरों की भूख का शिकार होगा। यह सोचता–सोचता वह उसे उस घने जंगल की ओर लेकर चल दिया।

गीदड़ यह सब देख रहा था। उसकी सर्दी भी उतर चुकी थी और अब वह अपने पैरों से भाग सकता था। उसने धोबी कुछ दूर चलते देखा और फिर शांत उसके कंधे पर लटका रहा। वह चाहता था कि धोबी स्वयं उसे अपने कंधे से उतारे न कि वह स्वयं धोबी के कंधे से धरती पर छलांग लगाये।

ऐसा ही हुआ–धोबी गीदड़ के वजन से थक चुका था। वह भी अब अपना पीछा उससे छुड़ाना चाहता था। उसको काम के लिए देर हो रही थी। उसने गीदड़ को एक घने पेड़ की आड़ में छुपाकर रखने की अपने मन में ठानी और उसने गीदड़ को अपने कंधे से नीचे उतारा तथा पेड़ की आड़ में रखते हुए सोचा कि अब इसे किसी जीव–जन्तु की चिन्ता नहीं है, यह यहीं से स्वर्गलोक को पहुँच जायेगा।

जैसे ही धोबी ने गीदड़ को कंधे से नीचे उतारा और गीदड़ के पैर धरती पर लगे वैसे ही वह वहां से इतनी तेज दौड़ा कि बेचारा धोबी देखता ही रह गया। वह अपना–सा मुंह लेकर अपने घर वापस आ गया।

गीदड़ जंगल की ओर भागता जा रहा था, उसने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा कि जिसने तेरी जान बचाई वह ठीक है, उसका कंधा सलामत है या नहीं।

वह भागता–भागता एक वन में पहुँच गया और वहां जाकर सुस्ताने लगा। उसकी निगाह जब अपने शरीर के अंगों पर पड़ी तो उसने पेाया कि उसका शरीर ऐसा नहीं रहा गया था जैसा कि कल तक था।

अब उसका शरीर नील लगने के कारण नीले रंग का हो गया था। उसने अपने इस नीलवर्ण को देखकर विचार किया कि इस रंग का लाभ इस रंग का लाभ उठाना चाहिए– उसने योजना बनाई कि वन के पशुओं को डराकर अपना रौब जमाना चाहिए।

यह सोचकर वह आगे बढ़ा और अन्य जन्तुओं के पास जाकर बोला, "ऐ पशुओं! वन देवी ने समस्त बूटियों के रस से मुझे स्नान कराया है। अब मेरा सुन्दर शरीर नील हो गया है। वन देवी ने आशीर्वाद देकर मुझे इस वन का राज्य भी सौंप दिया है। आप सबको मेरा आदेश माना होगा, अब आप सब मेरे शासन में रहे और अपने को मेरी प्रजा समझें। यदि ऐसा नहीं किया तो वन देवी आपसे नाराज हो जायेंगी। उन्होंने मुझसे कहा कि यदि तुम मेरा कहना, मेरा आदेश न मानोगे तो देवी तुम्हें श्राप भी दे सकती हैं।" गीदड़ जन्तुओं को इस प्रकार निर्देश दे रहा था। मानो वह देवी का भेजा हुआ ही कोई विशेष गीदड़ हो।

यह सुनकर वन के समस्त गीदड़ और अन्य पशु उसका निर्देश सुनकर भय से कांपने लगे।

उन्होंने उसे देवी का दूत समझकर झुककर अदब के साथ प्रणाम किया और देवी का प्रतिनिधि समझकर अपना राजा स्वीकार कर लिया।

गीदड़ मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ और अन्य जन्तुओं से अपनी सेवा कराने लगा।

उसने अपना नाम राजा कुर्बुर रखा। अब वन के सभी गीदड़ और अन्य पशु उससे अपना न्याय कराने आने लगे।

एक दिन कुर्बुर की राजसभा आयोजित थी। वन के सभी पशु वहां उपस्थित थे। कुर्बुर अहंकार में मदमस्त हो गया और उसने अपने साथियों (छोटे–बड़े सभी गीदड़ों आदि) को तिरस्कृत कर दिया।

सभी गीदड़ इस बात से बहुत दुःखी हुए। तब एक बूढे गीदड़ ने कहा, "तुम सब दुःखी मत होओ। जेसे इस मूर्ख ने हम नीति जाननेवालों का अपमान किया है वैसे ही हमें इसको नष्ट करने का उपाय करना चाहिए। सभी पशु इसके नीले रंग को देखकर धोखा खा गए हैं और इसको गीदड़ न समझकर राजा मान रहे हैं। अब हमें ऐसा करना चाहिए जिससे इसका भेद खुल जाए।" बूढ़ा गीदड़ राजा कुर्बुर से अत्यन्त चिढ़ गया थ। वह अपनी जाति के पशु को अपना राजा नहीं देखना चाहता था, क्योंकि वह स्वयं अपने राजा कुर्बुर से आयु में कई गुना था और नीति तथा आचार में उससे कहीं अधिक निपुण था। बूढ़े गीदड़ ने आगे अपने साथी गीदड़ों से कहना जारी रखा–"सुनो, मेरे दिमाग में एक योजना आयी है– हम सब आज सायंकाल में एक साथ मिलकर चिल्लायेंगे। तब वह हम सब का स्वर सुनकर अपने जातिगत स्वभाव के कारण चिल्ला उठेगा। उसकी आवाज दूसरे पशु भी सुनेंगे तब उसकी अवश्य ही पोल खुल जायेगी।"

बूढ़े गीदड़ की बात सुनकर सभी गीदड़ उसकी बात मानने के लिए तैयार हो गये।

शाम के समय राजा कुर्बुर अन्य पशुओं के साथ मन्त्रणा कर रहा है। सभी गीदड़ सभा में पहुच गये और कुछ दूर हटकर योजना के तहत एक साथ जोर–जोर से चिल्लाने लगे।

गीदड़ों की आवाज सुनकर–राजा बने गीदड़ कुर्बुर से न रहा गया। वह भी जातिगत स्वभाव के कारण खड़ा होकर "हुक्की–हू हुक्की–हू" दूसरे गीदड़ों की तरह चिल्लाने लगा।

सभा में उपस्थित वन के अन्य पशुओं के साथ जंगल का असली राजा (शेर) भी मौजूद था। उसने भी उसकी आवाज सुनी–तब वह भी सोचने लगा कि जिसको हम अपना राजा मान रहे थे वह तो हमारी प्रजा का एक डरपोक पशु (गीदड़) है।

यह देखकर शेर को अत्यधिक क्रोध आया और उसने अपने राजा बने गीदड को एक ही वार में समाप्त कर दिया। शेर ने उसे पकड़ा और पंजों से उसका दम निकाल दिया। इसीलिए किसी ने कहा है, "जो अपनों को छोड़कर परायों को अपनाता है, वह अवश्य ही नष्ट हो जाता है।"

कथा सुनाकर चकवा बोला, "इसीलिए मैं कहता हूं कि अपना पक्ष छोडकर आए हुए व्यक्ति का क्या भरोसा? जिस प्रकार आग सूखे वृक्ष के अन्दर घुसकर उसे भस्म कर देती है उसी प्रकार घर का भेदी सारे भेद, दोश और पराक्रम को जानता है, जोकि बरवाद करा देता है।" चकवा राजा को समझाता जा रहा था और राजा उसकी बातों को बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहा था।

चकवे की बात समाप्त हो जाने पर राजा ने कहा, " वो तो ठीक है, लेकिन दूर से आए हुए अतिथि का स्वागत करना मनुष्यता होती है। उसे आपने रखना है या नहीं, इस पर बाद में विचार कर लेंगे।"

राजा की बात सुनकर चकवा बोला, "महाराज! गुप्तचर भी चले गये, किलेबन्दी हो गई अब तोते को बुला लेना चाहिए। आप अपने सैनिकों के साथ उससे दूर से ही बात कीजिएगा।" चकवे ने राजा को एक अन्य परामर्श भी दिया।–"महाराज! आपको याद होगा कि चाणक्य ने अपने दूत के हाथों ही नन्द को मरवा डाला था।"

राजा ने स्वीकारात्मक अपनी गर्दन हिलाकर इशारा किया और सोचने लगे कि चकवा की यादशश्त बहुत तेज है, उसे ऐसी–ऐसी मिसाल याद हैं जोकि न जाने किस जमाने की होंगी।

राजा–चकवा के साथ बैठे योजना कर रहे थे। योजना तैयार हो

जाने पर राजहंस ने एक आम सभी बुलायी और फिर तोते तथा कौए को सभा में उपस्थित होने का आदेश दिया।

तोता हिरण्यगर्भ राजहंस के आसन से दूर बनाये गये आसन पर सिर ऊचा करके अकड़ कर बैठ गया और फिर बोला, "हे हिरण्यगर्भ महाराजाधिराज श्रीमान चित्रवर्ण ने आपको आज्ञा दी है कि यदि आप लक्ष्मी और प्राणों करो–वरना दूसरे स्थान पर रहने का ठिकाना करो।"

दूत की बात सुनकर राजा हिरण्यगर्भ में क्रोधित होकर बोला, "क्या यहां कोई नहीं है जो इस दुष्ट की गर्दन पकड़कर सभास्थल से बाहर निकाल दें?"

राजा को क्रोधित देखकर सभी पक्षी ऐसे हो गये, मानों उन्हें सांप सूंघ गया हो, परन्तु सभा में उपस्थित मेघवर्ण कौए ने साहस किया और वह उठकर राजा से सम्बोधित होकर कहे लगा, "राजन! आप जो कुछ करेंगे वह आपके मन की बात है, परन्तु कुछ करने से पहले आप मेरी बात सुन लीजिए।" चकवा की बात सुनकर राजा का ध्यान उसी ओर हो गया। यद्यपि राजा को अब भी बहुत क्रोध आ रहा था।

चकवा उपदेश देने के अन्दाज में कह रहा था, "जिस सभा में वृद्ध नहीं होता वह सभा नहीं होती।" चकवेने आगे बताया, "जो धर्म की न कहे वह वृद्ध नहीं है और वह सत्य नहीं है जो छल से युक्त है। दूत हीन जाति का होने पर भी मारने योग्य नहीं होता, क्योंकि दूत राजा का मुख है जो वेदों को हाथ में लेकर भी गलत नहीं बोलता। दूत के मुख से अपनी हीनता और शत्रु की प्रशंसा सुनकर कोई राजा उस पर क्रोधित नहीं होता। मैं मारा नहीं जाऊंगा' यह सोचकर ही दूत निडर होकर खरी–खोटी कुछ भी बात भरे दरबार में राजा के सम्मुख कह देता है।"

चकवा की बात सुनकर राजा और कौआ शान्त हुए।

तोता भी उठकर चल पड़ा। चकवे ने उसे बुलाकर समझाया तथा स्वर्ण आभूषण आदि देकर विदा किया। तोता वहां से विदा होकर चल दिया। विंध्याचल पहुंचकर तोते ने अपने राजा चित्रवर्ण को प्रणाम किया। राजा ने तोते को आदर के साथ बैठ जाने को कहा।

तोता बहुत थक गया था। राजा ने उसकी हालत देखकर कहा, "तोते! लगता है कि तुम बहुत थक गये हो– जाओं, जाकर आराम करो। कल तुमसे समाचार मालूम किया जायेगा।"

तोता दरबार से उठकर राजा को प्रणाम कर चला गया। रात भर आराम कर अगले दिन तोता पुनः दरबार में हाजिर हुआ।

तब राजा चित्रर्वा बोला, "प्रिय तोते! क्या समाचार है? बताओं वह कैसा देश है?"

"महाराज! यह कर्पूर देश तो एक स्वर्ग का टुकड़ा है और उसका राजा दूसरा इन्द्र। वहां की प्रशंसा अवर्णनीय है। अब तो युद्ध की तैयारी आपको करनी ही पड़ेगी।" तोते ने कहा।

तोते की बात सुनकर राजा ने सभी सभासदों को बुलाकर विचारविमर्श शुरु किया– राजा बोला, "आप सब सलाह दें कि हमें किस ढंग से युद्ध की तैयारी करनी चाहिए। आप सुना तो चुके ही हैं कि हमें युद्ध तो करना ही होगा।"

राजा ने मिसाल दी– "शास्त्रों में लिखा–सन्तोश्ज्ञ से बैठ जाने वाला ब्राह्मण, थोडे में सन्तोष करने वाला राजा, लज्जा करने वाली वेश्या और कुलीन स्त्री की बेशर्मी अनिष्टकारी होती है।

दरबार में उपस्थित दूरदर्शी नाम के एक गिद्ध ने कहा, "महाराज! अगर प्रजा और अधिकारी अनुकूल न हों तो युद्ध नहीं छेड़ना चाहिए। युद्ध तभी करा चाहिए जब मित्र लोग, मन्त्री और बन्धु–बान्धव तन–मन से शत्रु के विरुद्ध साथ देने को तैयार हों। जब तक युद्ध में भूमि, मित्र आगर स्वर्ग निश्चय न हो जायें, युद्ध व्यर्थ हैं।"शेष अगले क्रमांक में.....

शेष पेज 9 से आगे.....

करना होता हैं। इस दृष्टि से वास्तु विद्या उतनी ही पुरानी हैं जितनी मानव सभ्यता। लिखित साहित्य की दृष्टि से भारत में सर्वप्रथम ऋगवेद में वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों का उल्लेख मिलता हैं, तत्त पश्चातत् ब्राह्मण ग्रन्थों , महाकाव्यों , शुक्राचार्य , बृहस्पति , विश्वकर्मा द्वारा रचित ग्रन्थों तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र व पुराणों में भी किसी न किसी सन्दर्भ में वास्तु विज्ञान (कला) का विवरण मिलता हैं। ग्यारहवीं भाताब्दी में महाराजा 'भोजराज' द्वारा वास्तु शास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ " समरागण सूत्रधार " लिखा गया।

वस्तुतः वास्तु शास्त्र में पंच तत्वों के सन्तुलन पर ध्यान दिया जाता हैं। सभी जानते हैं – पृथ्वी , वायु , आकाश , जल और अग्नि नामक पंचभूतों से मानव शरीर बना हुआ हैं, वैसे ही मनुष्य जहाँ वास करता हैं उसे 'वस्तु' यानी वास्तु कहा जाता हैं तथा उससे सम्बन्धित विज्ञान को वास्तु विज्ञान (शास्त्र) कहा जाता हैं। वास्तु शास्त्र में इन्ही पंच तत्वों का संतुलन कर मनुष्य को लाभान्वित किया जाता हैं। पर्यावरण और वातावरण का अध्ययन भी वास्तु शास्त्र के अन्तर्गत ही आता हैं। वास्तु शास्त्रीय सिद्धान्तों के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार से यह निश्चित नहीं किया जा सकता हैं कि किसी भवन का निर्माण सही हुआ या नहीं।

दैनिक जीवन में व्यक्ति कुछ शारिरीक क्रियाएँ करता हैं। वास्तुशास्त्र हमे यह बताता हैं कि इन क्रियाओं को किस प्रकार सन्तुलित किया जाए कि प्राकृतिक ऊर्जा के साथ तालमेल बना रहे। हमारे यहाँ आजकल बहुमंजिले भवन निर्माण का दौर चल रहा हैं। भूमि की कमी देखते हुए अब तो मल्टी स्टोरी (बहुमंजिले) इमारतों का जमाना आ गया हैं। जनसंख्या वृद्धि , मंहगाई व भूमि की कमी को देखते हुए अब वास्तुविज्ञों का उत्तरदायित्व अधिक चुनौती पूर्ण होता जा रहा हैं।

वास्तु प्राकृतिक नियमानुसार निर्माण का वैदिक विधान हैं ,जिसके कारण परिवार में सुख–शान्ति और समृद्धि के साथ परिवार के सदस्यों में मधुर सम्बन्ध रहते हैं। इसके लाभ स्वरूप मनुष्य की सृजनशीलता एंव सहिष्णुता में वृद्धि होती हैं। इतना ही नहीं वास्तु सम्मात निर्मित भवनों में रहने वाले और काम करने वाले निरोगी रहते हैं जिसके कारण अवकाश कम लेते हैं तथा उनका अपने स्वास्थ्य पर अनावश्यक खर्च भी कम होता हैं क्योंकि बीमार कम होते हैं।

कुछ भी हो मनुष्य जब तक मनुष्य अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हैं , पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्ध हैं और अपने घर में तनाव रहित जीवन बिताते हुए सुख–शान्ति व समृद्धि की लालसा रखता हैं, तब तक वास्तु शास्त्र का महत्व बढ़ता रहेगा अर्थात इक्कीसवी सदी में वास्तु की उपयोगिता सर्वाधिक रहेगी।

आदमी का जीवन कैसे बदले ? मनुष्य को परमानन्द एवं परम शान्ति कैसे प्राप्त हो ? आध्यात्म और विज्ञान की सहायता से यह संभव किया जा सकता हैं। विज्ञान (ज्योतिष , वास्तु , हस्तरेखा व अंकशास्त्र) और आध्यात्म का समन्वय मनुष्य को चिन्ताओं , परेशानियों एंव व्याधियों से मुक्ति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता हैं।

शेष पेज 10 से आगे.....

1. यदि पंचम भाव में पुरुषग्रह बैठा हो अथवा पुरुषग्रह की दृष्टि पड़ती हो, तो जातक पुरुष देवता की उपासना करता है। यदि पंचम भाव में समराशि हो और उसमें चंद्र या शुक्र बैठा हो अथवा इन दोनों में से किसी की दृष्टि पड़ती हो, तो जातक किसी स्त्रीदेवता की उपासना करने वाला होता है।

2. यदि पंचम भाव में शुभग्रह (पूर्ण, चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र) हों, पंचमेश भी शुभग्रह हो, तो जातक सात्विक उपासक होता है। निष्काम उपासना ही उसका परम लक्ष्य होती है। ऐसा जातक अपने उपास्य के प्रति दार्शनिक विचार रखता है। वह वैष्णव होता है तथा इहलोक से ज्यादा परलोक की चिंता करता है।

3. यदि पंचमाधिपति सूर्य, मंगल या शनि हो और पंचम में पाप ग्रहों का ही आधिपत्य हो, तो जातक राजसी या तामसी प्रवृत्ति का उपासक होगा। उसकी उपासना निष्काम होने के बजाय सकाम होगी। वह अपनी उपासना में बलि आदि का भी प्रयोग करेगा।

4. सूर्य की पंचमस्थ सिथति जातक को सूर्योपासक बनायेगी।

5. यदि चंद्र और सूर्य पंचमस्थ हों या पंचम भाव पर दृष्टि डालते हों, तो जातक माँ गौरी का भक्त होगा।

6. इसी प्रकार मंगल का योग और दृष्टि जातक को कार्तिकेय, नवमस्थ होने से शंकर भगवान्, बुध का योग और दृष्टि होने से विष्णुजी की एवं बृहस्पति का योग और दृष्टि होने से शंकर भगवान् की भक्ति शीघ्रफलदायी होती है।

7. शनि, राहु और केतु की दृष्टि एवं सम्बन्ध पंचम स्थान से हो, तो जातक किसी भी देवता को इष्टदेवता मानने वाला होता है।

8. यदि पंचम भाव में राहु या केतु विद्यमान हो, तो जातक भूत–प्रेत, जादू–टोना आदि का पुजारी होगा। वह क्षेत्रीय एवं लोक देवी–देवताओं की उपासना करेगा।

इन योगों के अतिरिक्त यदि पंचम भाव बली न हो, तो हम पंचम से पंचम (नवम) भाव से उपास्य का चिंतन करेंगे।

निम्नलिखित योगों के आधार पर हम अपने आराध्य का निर्धारण कर सकते हैं। इसका विचार हमें नवम भाव से करना होगाः

1. यदि नवम भाव में चंद्रमा एवं शुक्र स्थित है या नवमेश चंद्रमा या शुक्र हो, तो जातक देवी का उपासक होगा।

2. यदि नवम भाव में सूर्य, मंगल अथवा गुरु पुरुष ग्रह है एवं नवमेश भी पुरुष भी ग्रह ही है, तो जातक पुरुष संज्ञक देवता की उपासना करेगा।

3. यदि नवम भाव में गुरु स्थित, हो अथवा नवमेश गुरु हो, तो जातक के आराध्य महादेव होंगे।

4. यदि नवम भाव में सूर्य स्थित हो अथवा नवमेश सूर्य, हो तो जातक के आराध्य राजसी प्रवृत्ति के होंगे। राम, कृष्ण आदि देवता राजसी प्रवृत्ति के कहलाते हैं।

5.यदि नवम भाव में मंगल स्थित हो अथवा नवमेश मंगल हो, तो जातक कार्तिकेय, हनूमान, भैरव आदि उग्र देवताओं का उपासक होगा।

6. यदि नवम भाव में शनि अथवा नवमेश शनि हो, तो जातक शिवजी की उपासना करेगा, क्योंकि शनि को उभयलिंगी ग्रह माना जाता है और शिवजी भी अर्द्धनारीश्वर स्वरुप में होते हैं, अतः शनि शिवजी की भक्ति प्रदान करता है।

7. नवम भाव में बुध स्थित हो अथवा नवमेश बुध हो, तो जातक विष्णु भगवान् के किसी भी रुप अथवा गणेशजी का उपासक होगा।

8. यदि नवम भाव में राहु–केतु स्थित हों, तो जातक को वाममार्गी, देवी या देवताओं के उग्र रुप की उपासना फलदायी हो सकती है।

उपर्युक्त योगों के अतिरिक्त निम्नलिखित योग हमारे ज्योतिष शास्त्रों में कहे गए हैः

1. सूर्य से सूर्य की अथवा शिवजी की उपासना का विचार करना चाहिए। 2. राहु से क्रूर एवं तामसिक देवी–देवतओं की उपासना का विचार करना चाहिए। 3. बुध से हम किसी भी देवी–देवता की उपासना का विचार कर सकते है। विशेषतः विष्णु भगवान् की उपासना बुध करवाते हैं। 4. चन्द्रमा से माँ भवानी की उपासना का विचार करना चाहिए। 5. मंगल से कार्तिकेय की अथवा हनूमानजी की उपासना करनी चाहिए। 6. गुरु से शिव की उपासना का विचार करना चाहिए।

❋ ❋ ❋

शेष पेज 10 से आगे.....

सौंपी गई जब हनुमान जी के समय अपने ईष्टदेव राम के ध्यान में मग्न थे तभी सूर्य पुत्र शनि ने अपने काला कुरुप चेहरा बनाकर क्रोध पूर्वक कहा– हे वानर मैं देवताओं में शक्ति शाली शनि हूँ। सुना है, तुम बहुत बलशाली हो। आँखे खोलों और मुझसे युद्ध करो मैं तुम से युद्ध करना चाहता हूँ। इस पर हनुमान जी ने बड़ी विनम्रता पूर्वक कहा– इस समय मैं अपने प्रभु का ध्यान कर रहा हूं। आप मेरी पूजा में विघन्न मत डालिए।

जब शनि लड़ने पर ही उतर आये तो हनुमान जी ने शनि को अपने पूछ में लपेटना शुरु कर दिया फिर उन्हें कसना प्रारम्भ कर दिया। जोर लगाने पर भी शनि देव उस बधन से मुक्त न होकर पीड़ा से व्याकुल होने लगे। हनुमान जी ने फिर सेतु की परिक्रमा शुरु कर शनि के घमंड को तोड़ने के लिए पत्थरों पर पूंछ झटका दे–देकर पटकना शुरु कर दिया। इससे शनि का शरीर लहू लूहान हो गया। जिससे उनकी पीड़ा बढ़ती गई तब शनि देव ने हनुमान जी से प्रार्था की मुझे बंधन मुक्त कर दीजिए में अपने अपराध की सजा पा चुका हूँ।

तब राम भक्त हनुमान जी बोले–तुम्हें तभी छोड़ेगे जब तुम मुझे बचन दोगे कि श्री राम के भक्त को कभी परेशान नहीं करेगें। यदि तुमने ऐसा किया तो मैं तुम्हे कठोर दंड़ दूगा। शनि ने गिड़गिडाकर कहा मैं बचन देता हूँ कि कभी भूलकर भी आपके और श्री राम के भक्त की राशि पर नहीं जाऊंगा। आप मुझे छोडदें। तब हनुमान जी ने शनि देव को छोड दिया। फिर हनुमान जी से शनि देव ने अपने घावों की पीड़ा मिटाने के लिए तेल मांगा। हनुमान जी ने जो तेल दिया उसे घाव पर लगाते ही शनि देव की पीड़ा मिट गई। उसी दिन से शनि देव को तेल चढ़ता है, जिससे उनकी पीड़ा शांत हो जाती है और वे प्रसन्न हो जाते है। ❋ ❋ ❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262